अप्रैल, 1980
वर्ष 15 ❋ अंक 11

ज्ञानामृत

मूल्य 1.75

अमृत-सूची

१. ईश्वरीय आनंद की अनुभूति (सम्पादकीय) १
२. चोरी-चोरी ४
३. सेवा-समाचार (चित्रों में) ५
४. सतयुग प्रजातंत्र पद्धति ७
५. आओ स्वर्ग बनाये (कविता) १०
६. सेवा समाचार (चित्रों में) ११-१६
७. प्रभु मिलन की प्यास (नाटक) १७
८. बाबा के प्रति (कविता) २३
९. आशा और संसार २४
१०. चित्र समाचार २५-३०
११. जीवन का आधार 'निश्चय' ३१
१२. लो आ गया (कविता) ३२
१३. शिव की अद्भुत किरणें (कविता) ३२
१४. असमंजस के बाद सामंजस्य ३३
१५. चित्र परिचय ३५
१६. आध्यात्मिक सेवा समाचार ३७

यह चित्र बंगलोर में मनाई गई रजत जयन्ती सम्मेलन तथा विश्व सम्मेलन के अवसर का है। कर्नाटक के राज्यपाल भ्राता गोविन्द नारायण प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर मुख्य प्रकाशिका आदरणीया दादी प्रकाशमणी जी, ज्ञानामृत व वर्ल्ड रिन्युअल के सम्पादक भ्राता जगदीश चन्द्रजी, ब्र० कु० हृदय पुष्पाजी, आशाजी तथा श्रीमति चन्द्रा गोविन्द नारायण बैठे हैं।

यह चित्र बगलौर में आयोजित विश्व-सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर का है। मंच पर बाईं ओर से ब्र० कु० प्रकाशमणी जी मुख्य (प्रशासिका) भूतपूर्व उपराष्ट्रपति भ्राता बी० डी० जत्ती तथा ब्र० कु० जगदीशचन्द्र (ज्ञानामृत एवं वर्ल्ड रिन्युअल के सम्पादक) बैठे हैं।

यह चित्र वारंगल में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। चित्र में इंडियन मेडिसिन के मंत्री भ्राता टी० टंग्रवाचारी को ब्र० कु० सविता राजयोग की व्याख्या दे रही हैं। उनके साथ अन्य बहन भाई खड़े हैं।

यह चित्र मोरिशस में मनाई गई शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। मंच पर वहाँ के तत्कालीन प्रधानमंत्री भ्राता वीरासामी रिंगाडु शिक्षामंत्री भ्राता खैर जगधरींग, सूचनामंत्री भ्राता सुरेश मुरभा, ब्र० कु० चन्द्रा, सोमप्रभा तथा प्रधान मंत्री की युगल आदि बैठे हैं।

गयाना जार्जटाऊन में शिव जयन्ती के महोत्सव पर ब्र० कु० कुमुद जी शिव परमात्मा का परिचय दे रही हैं। मंच पर जे. एन. भट्ट भारत हाई कमिश्नर तथा स्टीव नारायण जी बैठे हैं।

दादी जी ट्रीवेन्ड्रम में शिव बाबा का सन्देश सुना रही हैं उनकी दायीं ओर श्रीमती लछमी मेनन जी भाईदमोद्रम जी, भाई करथा जी भ्राता मजीद जी तथा बायीं ओर ब्र० कु० हृदय पुष्पाजी, ब्र० कु० रमेश जी ब्र० कु० ऊषा जीमंच पर बैठी हैं।

जलगांव मेले में हुए फंकशन के अवसर पर खादेश मिल के चेयरमैन भ्राता सुरेश जैन जी अपने विचार प्रकट कर रहे हैं साथ में ब्र० कु० विजेन्द्राजी ब्र० कु० मनोहर इन्द्राजी बैठी हैं ?

ट्रीवेन्ड्रम राज भवन में दादी जी केरला के गवंनर बहन ज्योती वेन्गटाचलेम जी के साथ ब्र० कु० रमेश जी व ब्र० कु० ऊषा जी ब्र० कु० हृदय पुष्पा जी व अन्य भाई बहन खड़े हैं।

जलगांव मेले का उद्घाटन करते हुए खादेश मिल के चेयर-मैन भ्राता सुरेश जैन जी ब्र० कु० पार्वती जी व ब्र० कु० सुधा जी तथा अन्य भाई बहन दिखाई दे रहे हैं।

बरनाला में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसका उद्घाटन वहां के तहसीलदार जी कर रहे हैं उनके साथ ब्र० कु० लेखराज जी ब्र० कु० अचल जी व अन्य बहन भाई खड़े हैं।

यह चित्र तिरुपति के आध्यात्मिक संग्रहालय का है जिसे देखने आंध्रप्रदेश के मुख्य मंत्री भ्राता चेन्ना रेड्डी परिवार सहित पधारे थे। ब्र० कु० सुन्दरी उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट कर रही हैं।

Regd No D (D) 178

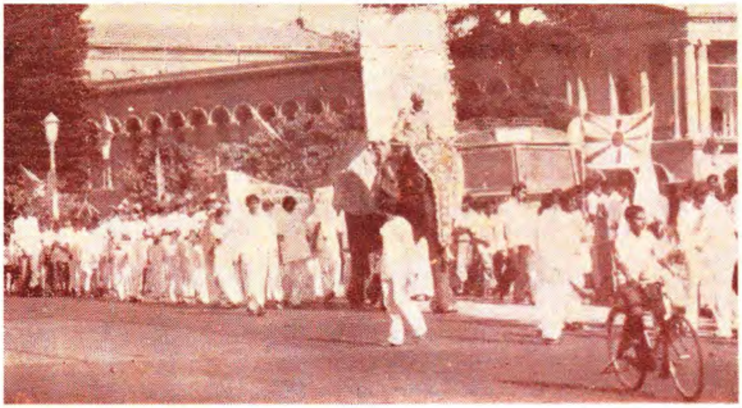

यह चित्र बंगलौर में आयोजित विश्व सम्मेलन एवं रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर निकाली गई विशाल शोभा यात्रा का है। हाथी पर आगे आगे सम्मेलन का चिन्ह है तथा पीछे बहन भाईयों का ग्रुप चल रहा है।

यह चित्र बड़ौदा सेवा केन्द्र द्वारा पादरा में आयोजित शिवदर्शन प्रदर्शनी के अवसर का है। भ्राता चन्द्रगोपाल जी को ब्र० कु० राज ईश्वरीय प्रसाद दे रही है। साथ में वहाँ के बहन भाई खड़े हैं।

चित्र में बंगलौर में आयोजित विश्व-सम्मेलन के चिन्ह का अनावरण भूतपूर्व उप-राष्ट्रपति भ्राता बी० डी० जत्ती कर रहे हैं।

यह चित्र मोगा में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर का है। स्वतन्त्रता सेनानी कामरेड रामनाथ जी टेप काटकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

बंगलौर में आयोजित 'विश्व-सम्मेलन' के अवसर पर कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायधीश डी० एम० चन्द्रशेखर प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० पीटर दामा तथा पंजाब जोन की इन्चार्ज ब्र० कु० चन्द्रमणी बैठे हैं।

सम्पादकीय

ईश्वरीय आनन्द की अनुभूति

संसार में विविध प्रकार के राग और रंग, साज़ और संग, रूप और रस, दृश्य और स्पर्श तथा गीत और गन्ध हैं और इनसे मनुष्य को नाना प्रकार के अनुभव होते हैं। मनुष्य के जीवन-काल में सफलता, यश, धन-सम्पदा आदि की प्राप्ति की अनेक परिस्थितियाँ आती हैं और अनेक प्रकार के स्वजनों से उसका मिलन, सम्बन्ध अथवा सम्पर्क होता है और इनसे भी उसे अनेकानेक प्रकार के अनुभव उसे होते हैं। कभी उसे हर्ष-उल्लास, सुख-सुविधा या शान्ति-विश्रान्ति का अनुभव होता है तो कभी कौतुक-आश्चर्य या रस-रास का। परन्तु इन सभी से विलक्षण, विशेष, श्रेष्ठ एवं कल्याणप्रद अनुभव ईश्वरीय आनन्द का अनुभव है। ईश्वरीय आनन्द प्रभु-मिलन से होता है और प्रभु-मिलन ही सबसे सुन्दर और सुमधुर मिलन है। वही सबसे बड़ा कौतुक एवं आश्चर्य भी है, जभी तो मनुष्य उस अनुभव के समय अवाक् हो जाता है और उसकी जिह्वा उसका वर्णन नहीं कर सकती। वह ऐसा सुख है कि जिसके आगे संसार के सभी सुख फीके हैं; तभी तो राजा भरतृहरि, राजा गोपीचन्द आदि राजाओं ने उसे पाने के लिए अपना राज्य और अपने महल-माड़ी भी छोड़ दिये। उस आनन्दानुभूति में इतना हर्ष-उल्लास है कि मन नाच उठता है और नाचता ही रहता है कि उसे बीते हुए दुःख की धुन्धली स्मृतियाँ भी नहीं आतीं। जिसे ईश्वरीय मिलन का साज़ आ जाता है, उसके लिये सभी साज़ बज उठते हैं और वह सभी राज़ जान जाता है। जिसे ईश्वरीय आनन्द की सुगन्धि प्राप्त हो जाती है उसका जीवन-पुष्प दिव्य गुणों से सुगन्धित हो उठता है; उस पर लोग फूल चढ़ाने की कामना करते हैं। उसका आत्मिक रूप ऐसा हो जाता है कि जन-जन उसके दर्शन को दौड़ते हैं। उस पर ज्ञान-रंग ऐसा खिल उठता है कि बस, बहार आ जाती है और सभी के जीवन का रंग-ढंग बदलना शुरू हो जाता है। परन्तु प्रश्न यह है कि ईश्वरीय आनन्द का अनुभव हो कैसे ?

अनुभव के आधार

हम देखते हैं कि अनुभव चाहे किसी प्रकार का क्यों न हो उसका आधार मुख्यतः सात बातों पर होता है। हम उन सातों का यहाँ उल्लेख कर रहे हैं—

(१) **निश्चयात्मक ज्ञान**—पहले तो मनुष्य को यह ज्ञान होता है कि अमुक वस्तु से उसे अमुक प्राप्ति होगी अथवा अमुक व्यक्ति से उसे फलाँ सुविधा, सुख या सहयोग मिलेगा। उदाहरण के तौर पर उसे पता होता है कि मिठास चीनी से या शर्करा वाली वस्तुओं ही से प्राप्त होगा या खट्टापन इमली द्वारा उपलब्ध होगा। इसी प्रकार उसे यह ज्ञात होता है अथवा यह ज्ञान उसे लेना पड़ता है कि अमुक दुकान से अमुक वस्तु उपलब्ध होगी अथवा अमुक व्यक्ति अमुक रोग का विशेषज्ञ है या फलाँ मनुष्य फलाँ विषय का वकील है, आदि। इसमें उसे तनिक भी संशय नहीं होता कि मिठास उसे चीनी से मिलेगा न कि नमक या इमली से और कि रोग का निदान डाक्टर द्वारा होगा न कि किसी हलवाई द्वारा। इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य को भी पहले यह निश्चयात्मक ज्ञान होना चाहिये कि ईश्वरीय आनन्द उसे ईश्वर ही से प्राप्त होगा, किसी भी मनुष्य से नहीं। उसे यह बोध हो जाना चाहिये कि ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है और उस तक कैसे पहुंचा जाय ताकि ईश्वरीय आनन्दानुभूति की प्राप्ति उसे हो सके।

(२) **विषय-ग्रहण**—केवल यह जान लेने से कि मिठास चीनी से उपलब्ध होता है, मिठास का अनुभव नहीं हो जाता बल्कि चीनी को ग्रहण करना पड़ता है। जिस व्यक्ति से हमें जो सुख-सुविधा मिल सकती है, उसकी केवल जानकारी ही से हमारे उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती बल्कि उससे सम्पर्क करना पड़ता

है। मानसिक तौर पर भी जिस विषय के चिन्तन से हमें हर्ष अनुभव होता है उस विषय को हमें मन में ग्रहण करना पड़ता है। यदि नेत्र दृश्य को ग्रहण न करें, जिह्वा रस का ग्रहण न करे या कान संगीत को ग्रहण न करें तो उस-उसकी अनुभूति नहीं होती। विशेष बात यह है कि इन्द्रियों का यदि अपने-अपने विषय से सम्पर्क हो भी जाय तो भी जब तक मन उसका ग्रहण न करे तब तक मनुष्य को उसका अनुभव नहीं होता। ठीक इसी प्रकार, ईश्वर को जान लेने पर मन द्वारा उसका ग्रहण आवश्यक है। यदि मन किन्हीं ऐन्द्रिय विषयों के ग्रहण में तत्पर है अथवा किन्हीं व्यक्तियों के चिन्तन में लगा हुआ है तो उस द्वारा ईश्वर का ग्रहण न होने से उसे ईश्वरानुभूति नहीं हो सकती। अतः इस सर्वश्रेष्ठ अनुभूति के लिये ईश्वर से मानसिक सम्पर्क स्थापित करना जरूरी है।

हम नित्यप्रति देखते हैं कि जब कोई मनुष्य श्रेष्ठ संगीत के कार्यक्रम का रस लेने के लिए बैठा हो, तब यदि कोई व्यक्ति आ कर उससे बात करने लगे और इस प्रकार उसका अवधान (attention) संगीत से हट कर बात को ग्रहण करने में लग जाये तो वह संगीत के रस का अनुभव नहीं कर सकता। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति किसी सुन्दर बाग़-बग़ीचे से गुज़र रहा हो परन्तु उसके मन में उस समय व्यापार-सम्बन्धी किसी चिन्ता का ग्रहण हो तो वह वहाँ के सुन्दर दृश्य का या वहाँ की भीनी-भीनी सुगन्धि का रस नहीं ले पाता। ठीक इसी तरह, ईश्वरानुभूति के लिये भी मन द्वारा ईश्वर के गुणवाचक नाम धाम, रूप-अनुप आदि का ग्रहण आवश्यकीय है।

(३) **विचार-तरंग**—मनुष्य जब किसी विषय या व्यक्ति से सम्पर्क करता है, तब उसी के बारे में ही उसके मन में विचार चलने लगते हैं, तभी उसे उसकी अनुभूति होती है। जब दो सखा परस्पर मिलते हैं तो एक-दूसरे के बारे में उनके मन में प्रेम-तरंगें उठती हैं। तभी वे प्रेम-विभोर होकर उसका अनुभव कर पाते हैं। एक व्यक्ति जब फलों का रस पीता है तो उसके मन में यह विचार तरंगें चलती हैं कि यह सेब और संतरे का रस है, मीठा है, स्वास्थ्यप्रद है, आदि-आदि। दो सम्बन्धी मिलते हैं तो वे भी इन्हीं विचारों में होते हैं कि—'यह व्यक्ति फ़लां नगर से आया है, यह मेरा चचेरा भाई है, आजकल डाक्टर का काम करता है, स्वभाव से यह शीतल और मधुर है, मुझसे इसकी प्रीति है, यह समय पर सहयोग देने वाला व्यक्ति है, धनवान होने पर भी यह नम्र स्वभाव का है', आदि-आदि। इसी प्रकार, ईश्वरीय मिलन द्वारा ईश्वरीय आनन्द का अनुभव करने के लिए भी ईश्वर के मनन-चिन्तन (Meditation) की आवश्यकता है। "ईश्वर ज्योतिस्वरूप है, वह परमधाम का वासी है, वह परम पवित्र है, सर्वशक्तिमान है, प्रेमस्वरूप है", आदि-आदि विचार-तरंगें मन में चलाने से हम आनन्दानुभूति प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार की विचार-तरंगों, भाव-तरंगों, प्रेम तरंगों को चलाना ही योगारम्भ है। यह अनुभूति तक पहुंचने की सीढ़ी है। ईश्वर तक पहुंचाने वाली यही 'प्रेम गली' है। यही सच्ची यात्रा है।

४. **वातावरण से अलगाव अथवा वातावरण की अनुकूलता**—जिस विषय को हम ग्रहण करते हैं, उस विषय, वस्तु अथवा व्यक्ति के प्रति मन में विचार-तरंग या भाव-तरंग चलाने से हमारा मन आस-पास की वस्तुओं से या अन्य व्यक्तियों से अलग हो जाता है, अर्थात उसका ध्यान उन से हट कर ग्रहीत विषय ही का मनन-चिन्तन करने लगता है। यदि वह आने-जाने वाले अन्य व्यक्तियों की ओर भी ध्यान देता है अथवा अन्य ध्वनियों को भी सुनता है तो उस को ग्रहीत वस्तु का घना (intense) अनुभव नहीं हो पाता, अथवा उसका अनुभव सतत-निरन्तर या अटूट एवं एकरस नहीं होता बल्कि परिच्छिन्न या टूक-टूक होता है।

हाँ, वातावरण को अनुकूल, सहायक या प्रेरक बनाया जा सकता है। ऐसे गीत अथवा संगीत का प्रयोग किया जा सकता है जो हमारे मन में ईश्वर-विषयक ही विचार-तरंगें, भाव-तरंगें और प्रेम-तरंगें उत्पन्न करे। ऐसा प्रकाश किया जा सकता है जो प्रकाश स्वरूप परमात्मा ही की ओर हमारे मन को ले जाये और शेष वातावरण पर हावी हो जाय। सामने किसी ऐसे ही व्यक्ति को आसनस्थ किया जा सकता है जो स्वयं भी ईश्वर से सम्पर्क स्थापित किए हुए हो ताकि उसे देख कर हमारा मन भी इधर-उधर जाने की बजाय ईश्वर ही का ग्रहण करे।

५. **स्मृति, चेतना अथवा अवस्थिति**—जब हम

किसी मनोहर दृश्य को देख रहे होते हैं तो हमें केवल वह दृश्य ही याद होता है, शेष सब भूल जाता है। जब हम कोई श्रेष्ठ गीत सुन रहे होते हैं या नाटक देख रहे हों तब हमारा उस से एकाकार हो जाता है। उस समय हमें यह याद नहीं होता कि हमारी आयु कितनी है या हमारे घर में कितनी मेजें और कितनी कुर्सियाँ हैं। जब हम किसी प्रियवर से मिलते हैं तो सुधबुध को खो बैठते हैं और, बस, यही स्मृति रहती है कि हम अपने स्नेही सखा के पास बैठे हैं। "एक मैं, दूसरा वह, तीसरा न कोई"—उस समय ऐसी स्थिति होती है। उस समय यदि कोई तीसरा आ जाय तो वह विघ्नरूप होता है। इसी प्रकार, बस ईश्वर ही के पास हम स्वयं को टिका हुआ स्मरण करें और इसी स्मृति ही को अपना आसन बना लें। प्रभु-मिलन की यही रहस्यमयी युक्ति है। ईश्वरीय आनन्दानुभूति की सारी सफलता इसी पर आधारित है। इसी स्मृति में किसी देहधारी का प्रवेश न हो, हड्डी-मांस वाले जन्म-मरण और विकाराधीन किसी प्राणी का इस में आगमन न हो। सात-समुन्दर पार जो प्रभु का देश है, जिसे परमधाम कहते हैं, उस प्रकाश-मन्दिर में प्रवेश पाने की यही विधि है।

६. **तन्मयता**—लौकिक अनुभव की भी पराकाष्ठा तभी होती है जब मनुष्य रसास्वादन की क्रिया में स्थिर मन वाला हो जाता है। प्रेम की अनुभूति में भी ऐसा ही होता है कि मनुष्य प्रेम-विचारों में निमग्न होता हुआ, प्रेमी की स्मृति में तन्मय हो जाता है। इसी प्रकार आनन्दानुभूति भी मनुष्य पूर्णरूपेण तभी कर पाता है, जब वह आनन्द स्वरूप परमपिता परमात्मा के प्रेम में तल्लीन हो जाता है; उसे और कुछ सूझता ही नहीं। तन्मय होने से ही वह आनन्दमय हो जाता है। जैसे मिठास इकट्ठा होते-होते, घनीभूत होकर मिसरी, अर्थात मिठासस्वरूप हो जाता है, ऐसे ही जब ईश्वर के प्रति विचार-तरंगों के साधन से मनुष्य की स्मृति घनीभूत या एकाकार हो जाती है तब वह भी आनन्दघन हो जाता है। जैसे लोहे को अग्नि में डालकर धौंकनी से अग्नि को प्रज्ज्वलित कर लोहा भी अग्नि के संग से लाल प्रज्ज्वलित हो जाता है, ठीक वैसे ही आत्मा भी भाव-तरंगों की धौंकनी से ईश्वरीय स्मृति में आनन्दमय ही हो जाती है; वह भी अपने "लाल की लालिमा से लाल" हो जाती है।

७. **स्थायित्व**—फिर जितना कोई इसमें स्थित होता है, उतना ही उस पर पक्का रंग चढ़ जाता है। उतना ही वह आनन्द रस-सम्पन्न हो जाता है। यह स्थायित्व ही परिपक्कवता का साधन है। इससे आनन्द रस आत्मा में पैठ जाता है। इससे आत्मा की सारी रिक्तता आनन्द को स्थान दे देती है। इससे फिर दुःख या अशान्ति के लिए कोई स्थान ही नहीं रह जाता।

इस प्रकार, ईश्वरानुभूति अथवा उस द्वारा आनन्दानुभूति कोई कष्ट-साध्य क्रिया नहीं बल्कि यह सहज साधनों पर आधारित है। यदि हम परमपिता परमात्मा का यथा-सत्य ज्ञान प्राप्त करके, उन ज्ञान-तरंगों द्वारा प्रभु-प्रेम में स्थायित्व का अभ्यास करें तो हमारा परम सौभाग्य !

—जगदीश

सूचना

'ज्ञानामृत' तथा 'वर्ल्ड रिन्युवल' पत्रिका का शेष एक ही अंक प्रकाशित होना है। उसके बाद नया वर्ष चालू होगा। इसलिए सभी सेवा-केन्द्रों तथा सदस्यों से निवेदन है कि वे अगले वर्ष के लिए ३० अप्रैल तक शुल्क भेज दें और अगले वर्ष ज्ञानामृत के लिए उनके सेवा-केन्द्र के जितने सदस्य हों उनकी सूचना भी तब तक भेज दें।

—सम्पादक

चोरी-चोरी

ले०:—ब्रह्माकुमार बलदेवराज गुप्ता (जालन्धर)

"चल अकेला चल अकेला चल अकेला
तेरा मेला पीछे छूटा राही चल अकेला"......

मैं अपने कमरे में बैठा गीत गा रहा था। मुझे ऐसा लगा कि जैसे किसी ने मेरे मुख पर अपना हाथ रख दिया हो और मैं गीत बन्द करने के लिए मजबूर हो गया। मैं कुछ हैरान-सा हो गया। मैंने आवाज़ दी "तुम कौन हो ?" मैं असमंजस में पड़ गया। कमरे में सिवाय मेरे और कोई नहीं था, लेकिन यह आवाज़ कहाँ से आई ! मैंने फिर आवाज दी "आप कौन हैं जो मेरे कमरे में चुपके से आए हो ?" फिर वही हंसी भरी आवाज ने उत्तर दिया "क्या तुम मुझे भूल गए हो ?" मैं फिर चौंका यह प्रत्युत्तर कहाँ से आया, इस कमरे में मैं तो अकेला ही हूं सब खिड़कियाँ दरवाजे भी बन्द हैं फिर यह कौन, कब मेरे कमरे में प्रवेश हो गया।

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था, साथ ही साथ मेरे मन में एक अजीब सी आनन्द की लहर भी आने लगी। मुझे ऐसा लगने लगा जैसे मुझे कोई शक्ति दे रहा हो। मैं अपने को भूलता सा जा रहा था, तथा शान्ति के एक गहरे सागर में न चाहते हुए भी डूबता जा रहा था। मेरे मन में बह रही संकल्पों की अनवरत धारा रुकती सी जा रही थी। धीरे-धीरे कुछ ही क्षणों में मैं हल्का, देह से पार, अव्यक्त-सा हो गया। मेरा मन मौन हो गया, कमरे में एक अजीब सी शान्ति ने अपना साम्राराज्य जमा लिया। मेरी आँखें खुली थी, मेरी आँखों के सामने एक अव्यक्त-सी मूर्त बन गई। एक नूरानी चेहरा, होठों पर मुस्कान, स्नेह से भरे नयन तथा समस्त शरीर से सुनहरे रंग की आभा-सी निकलकर सारे कमरे में फैल रही थी' मस्तक चमक रहा था। मैं समझ गया मेरे मन का भ्रम दूर हो गया कि मेरे कमरे में कौन है, किसने मेरा गीत बन्द किया, किसने मेरे प्रश्नों के उत्तर दिए, किसने यह रुहानी मस्ती बिखेरी, मेरे मन का मौन भंग होने लगा, मेरे मन में एक स्नेह का सागर उमड़ आया। मुझे इस बात का कोई एहसास नहीं रहा कि मैं कब उछल कर उस अव्यक्त फरिश्ते की लपेट में आ गया। मुझे ऐसा लगा कि मैं इस दुनियाँ से दूर, बहुत दूर जा चुका हूं। मुझे दुनियाँ के सब दुःख भूल गए। शान्ति के गहरे सागर में खोकर मैं अपने अस्तित्व को भूल गया था। वो कैसा सुख था। वह कैसी शान्ति थी वो कैसा आनन्द था। मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता हूं। मेरे कानों में फिर वही शब्द गूँजने लगे, "क्या तुम मुझे भूल गए हो, क्या तुम अपना वायदा भूल गए हो?" नहीं बाबा, मेरे मीठे बाबा, मैं आपको कैसे भूल सकता हूं ? तुम्हीं संग खाऊँ तुम्हीं संग पीऊँ तुम्हीं संग बैठू यही मेरा वायदा है। मैं यह वायदा कैसे भूल सकता हूं ? मुझे अन्त तक इस वायदे पर पक्का रहना है। हाँ बच्चे, बाबा का भी यही वायदा है कि साथ लेकर जाना है। फिर तुम अकेले कैसे हो ? क्या तुम अकेले चल रहे हो ? साथी को भूल गए हो ? साथी बिगर रास्ता मुश्किल हो जाएगा, थकावट महसूस होगी, अकेलापन, उदासीन नीरसता जीवन के सफर को कंटमय बना देंगे, संगम युग की प्रप्ति का अनुभव नहीं होगा, अतिन्द्रिय सुख शान्ति पवित्रता की कमी की महसूसता होती रहेगी। सदा मुझे साथ रखो। मुझे अपना साथी बनाओगे तो सदा मेरा साथ अनुभव करोगे, ऐसा कहते हुए वह अव्यक्त-सी मूर्त गायब हो गयी। धीरे-धीरे मैं अपने अस्तित्व में आने लगा, जैसे कोई तन्द्रावस्था से बाहर आ रहा हो। मेरे अन्दर अदम्य उत्साह था, मेरे अन्दर अपार शक्ति थी। जिस प्रकार स्नान करने के बाद शरीर में ताजगी व स्फूर्ति आ जाती है, उसी प्रकार मैं अपने अन्दर नवीनता-सी महसूस कर रहा था, और बीते हुए क्षणों को स्मरण करता हुआ खुशी खुशी मेरा मन यह गीत गाने लगा—

इक साथी मेरा बड़ा पुराना, जाने साथ वो खूब निभाना
साथ रहे दिन-रात, देखो मेरा दाँया हाथ, दाँया हाथ

जयपुर (राजापार्क) सेवाकेन्द्र द्वारा मनाए गए शिव जयन्ती समारोह में हाईकोर्ट के जज भ्राता एम० एल श्रीमाल जी प्रवचन कर रहे हैं।

यह चित्र लण्डन में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। वहाँ की आर्य समाज के जनरल सैक्रेटरी डा० शर्मा जी प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० सुदेश एवं जयन्ती बैठे हैं।

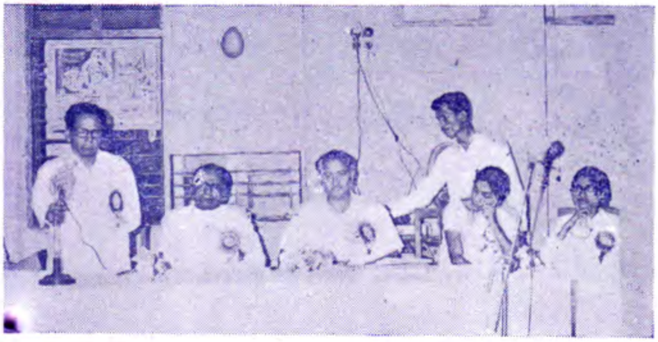

यह चित्र शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। भैया साहब परदेशी अपने विचार प्रकट कर रहे हैं। मंच पर सहकार मन्त्री भ्राता नारायणराव, भ्राता रवीन्द्र सबजज तथा उनकी युगल तथा ब्र० कु० सुनन्दा बैठे हैं।

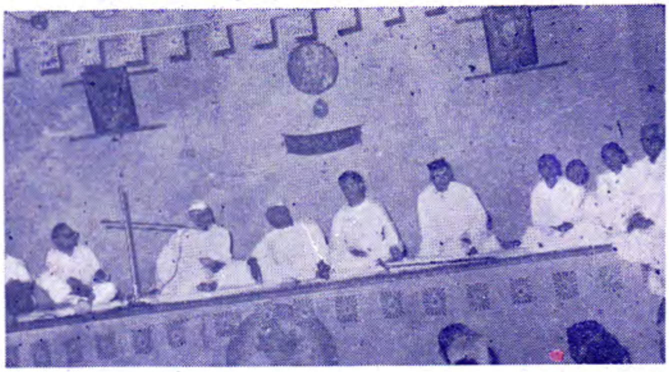

यह चित्र शोलापुर में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। मंच पर वहाँ के प्रमुख व्यक्ति बैठे हैं।

यह चित्र जबलपुर में आयोजित आध्यात्मिक सम्मेलन का है। वहाँ के स्कूल के प्राचार्य प्रवचन कर रहे हैं।

इस चित्र में फतेहपुर रेलवे क्लब में आयोजित चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के रेलवे स्वास्थ्य अधिकारी करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

यह चित्र भरतपुर सेवा केन्द्र द्वारा फतेहपुर सीकरी में मनाए गए शिव जयन्ति समारोह के अवसर का है। वहाँ के नगरपालिका अध्यक्ष अपने विचार प्रकट कर रहे हैं।

यह चित्र बलसार में आयोजित 'शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवसर का है। लायन्स क्लब के प्रमुख भ्राता बसंत भाई प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० लता तथा वहाँ के कलेक्टर आदि बैठे हैं।

यह चित्र करौली में आयोजित शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है वहाँ के स्कूल के प्रधानाचार्य भ्राता पुरुषोत्तम सरस्वती जी ध्वजा रोहण कर रहे हैं।

यह चित्र राजकोट में आयोजित शिव जयन्ती समारोह, प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर के अवसर का है। वैस्टर्न रेलवे के डिविजनल सुपरिन्टैन्डेन्ट तथा अन्य बहन भाई मंच पर बैठे हैं।

यह चित्र गोरे गाँव में आयोजित जीवन दर्पण समारोह के अवसर का है। वहाँ के टैक्सटाईल इक्विपमेंट के डायरेक्टर भ्राता मगन भाई उद्घाटन कर रहे हैं।

यह चित्र सतारा में आयोजित शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। जनता सहकारी बैंक के चेयरमैन भ्राता दामोदर कृष्ण जी प्रवचन कर रहे हैं। ब्र० कु० शाँता जी एवं नलिनी जी मंच पर बैठे हैं।

सतयुग-प्रजातन्त्र पद्धति (Democracy)

ले० ब्रह्मा कुमार रमेश, बम्बई

राज्य-कारोबार चलाने के लिये अनेक प्रकार की व्यवस्थाएं हैं। जैसे एक परिवार को चलाने के लिए कौटुम्बिक व्यवस्था बनानी पड़तीहै वैसे ही विविध प्रकार से राज्य-कारोबार चलाने के लिये पद्धतियाँ अपनानी पड़ती हैं। सतयुग में राज्यव्यवस्था के अर्थ विशेष प्रकार की पद्धति परमपिता परमात्मा शिव ने बनाई है। तब धर्मसत्ता और राज्यसत्ता एक ही के हाथों में होती है। बाद में इन दोनों सत्ताओं में आपस में संघर्ष के कारण विच्छेद हुआ और अन्त में विच्छेद के कारण दोनों सत्ताएं अलग-अलग हाथों में चली गईं और फिर ऐसी राज्यसत्ता को चलाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयोग किये गये।

इन्हीं प्रयोगों के अन्दर प्रजातन्त्र-राज्य (Democracy) का प्रयोग सृष्टि रूपी रंगमंच पर करीब ५००-६०० वर्ष हुआ। इंग्लैंड में ऑलिव्हर क्रोमवेल (Oliver-Cromwell) जैसे विचारशील लोगों नें राजाशाही पद्धति में परिवर्तन किया और प्रजातन्त्र-राज्य की स्थापना की। चुनाव के द्वारा लोगों का लोगों पर राज्य शुरू किया। थोड़े समय के बाद ही लोगों ने इस प्रजातन्त्र-राज्य पद्धति को अस्वीकार किया। अंशित रूप में राजाशाही वापस आई और आज भी इंग्लैंड में उसी अंशित रूप में राजाशाही चालू है। इंग्लैड में आज भी लोगों के द्वारा चुने गये संसद-सदस्यों (Member of Parliament) के द्वारा लोक-सभा और उसी के अन्दर बहुमत प्राप्त पक्ष द्वारा चुने गये व्यक्ति को पंतप्रधान बनाया जाता है और इस पंत-प्रधान द्वारा रचित प्रधानमंडल द्वारा राज्यव्यवस्था और कारोबार चलता है। और न्यायमंत्र (Judiciary) के द्वारा लोगों को कानून के बारे में किसी भी प्रश्न का हल मिलता है।

चुनाव में समाज के विभिन्न कक्षा के लोगों को एक-समान मताधिकार रहता है। मताधिकार उम्र के आधार पर मिलता है और सबको समान वोट (Vote) देने की क्षमता मिलती है। मतदाता सोच-समझ करके करीब हर पाँच वर्ष में संसद के सदस्यों के चुनाव में अपना मतदान देता है और उसी तरह से मतदाता नगरपालिका आदि के चुनाव में भी अपने मत द्वारा नगर-सभासद (Municipal Councillor) आदि को चुनते हैं। विभिन्न पार्टियां अपने-अपने चुनाव घोषणा-पत्र द्वारा, उनकी पार्टी क्या कार्य करेगी, वह जनता के सामने रखती है। इस प्रकार के चुनाव द्वारा चुने हुए सदस्यों द्वारा जो राज्य-कारोबार चलता है उसको प्रजातन्त्र-राज्य (Democracy) कहते हैं। ऐसा राज्य-कारोबार ५ या ७ साल तक चुने हुए व्यक्तियों द्वारा चलता है बाद में फिर से चुनाव होता है और चुनाव के पश्चात् बहुमत अनुसार कोई भी पक्ष अपना स्थान राज्य के प्रधान-मंडल के रूप में ग्रहण करता है। समाजवाद को आर्थिक क्षेत्र की बात भी समझने जैसी है। समान-तख्त (समान-अवसर Equal Opportanity) सबको मिले उसी का पुरुषार्थ हमेशा होता है और इसी प्रकार कानून के समक्ष भी सभी प्रकार के वर्ग के लोग एक-समान गिने जाते हैं; कानून की नज़रों में कोई भी छोटा या बड़ा नहीं होता। यह आर्थिक व्यवस्था लोगों को विशेष जँचती है क्योंकि उसके बारे में आद्य विचार दुनिया के आगे रखने वालों ने सोचा था कि पैसे वालों के पास ज्यादा अवसर (Opportunity) मिलता है और ग़रीबों को कम अवसर मिलता है। इसलिए समान-तख्त का एक-स्वरूप समान मताधिकार है अर्थात् आर्थिक विचार का प्रभाव राज्य-कारोबार की नीति और स्वरूप पर पड़ता है।

प्रश्न यह है कि सतयुगी देवताओं को राज्य-कारोबार और आर्थिक कारोबार और समाजवाद के राज्य-कारोबार और आर्थिक कारोबार में क्या फ़र्क है।

क्या समानता सम्भव है ?

आर्थिक कारोबार के भेद को सोचने से लगता है कि समान-तख्त सबको मिले, यह सिद्धान्त तो अच्छा है परन्तु समान-तख्त क्या समानता उत्पन्न कर सकता है ? तख्त बाहर की बात है, तख्त के साथ

बुद्धि का विचार किया ही नहीं गया। बुद्धि के बारे में शिव पिता परमात्मा ने हम बच्चों को बताया है कि बुद्धि आत्मा का अविभाज्य अंग है और बुद्धि के साथ मन और संस्कारों का भी संबंध है। जैसे हममें से हरेक आत्मा के मन और संस्कार अलग-अलग हैं वैसे ही बुद्धिबल भी अलग-अलग हैं। बुद्धिबल का आधार पिछले कर्म, आन्तरिक वृत्ति, तथा आभास आदि-आदि भी हैं। इन सबका प्रभाव मनुष्य के व्यावहारिक जीवन पर पड़ता है। समान-तख्त का परिणाम समान नहीं होता यह निर्विवाद बात है। उदाहरणार्थ आजकल विभिन्न सरकारों द्वारा लाटरी (Lottery) पद्धति अपनाई गई। हर एक को पहिला इनाम मिलने का समान-तख्त दिया जाता है। सब एक रुपया खर्च भी करते हैं अर्थात् खर्च करने का तख्त समान है परन्तु इनाम तो लाखों में से एक को ही मिलता है। इनाम सिर्फ़ तख्त के आधार पर मिलता तो सबको मिलना चाहिए परन्तु इनाम पूर्व कर्म आदि द्वारा निर्मित प्रारब्ध के द्वारा मिलता है। इसलिए यह पूर्व-कर्म और प्रारब्ध में समानता समाजवाद के अन्दर निर्मित नहीं हो सकती। और फल-स्वरूप आर्थिक व्यवस्था में भेद समाज के अन्दर ज़रूर निर्माण होता है।

इस भेद का निवारण करने के लिए शिव बाबा ने संगमयुग में सतयुगी दैवी स्वराज्य के स्थापन के कारोबार में सबको समान तख्त देने का प्रयत्न किया है। शिव बाबा वरदानी मूर्त बन करके, रहम दिल बाप बन करके, धर्मराज होते हुए भी बीती को बीती करने की क्षमता दिखा करके सबको फिर से आगे बढ़ने की उम्मीद दिखाकर देरी से आये हुए बच्चों का भी उमंग और उत्साह बढ़ाते हैं। समानता के संदर्भ में शिव-पिता की अव्यक्त वाणी के निम्न-लिखित शब्दों पर वाचक-गण विचार करें। (वैसे तो और भी कई जगह शिव पिता परमात्मा ने साकार ब्रह्मा के माध्यम द्वारा तथा अभी की अव्यक्त वाणियों द्वारा समान-तख्त की बात बताई है)—

"लास्ट सो फ़ास्ट जा सकता है। अभी भी परि-वर्तन की मार्जिन है। अभी 'टू लेट' (Too late) का बोर्ड नहीं लगा है। गुप्त-पुरुषार्थी, दिन-रात एक दृढ़ संकल्प के पुरुषार्थी हाइ जंप (High Jump) लगा सकते हैं। इसलिए फिर भी अपने भाग्य को नम्बर वन बनाने के पुरुषार्थ की लाटरी डालो तो नम्बर निकल आयेगा। समझा, क्या करना है : लास्ट चान्स है इसलिये बीती सो बीती करो, भविष्य को श्रेष्ठ बनाओ। इसलिए बाप-दादा फिर भी सबको चान्स दे रहे हैं, फिर उलाहना नहीं देना—हम कर तो सकते थे लेकिन किया नहीं। समय नहीं मिला, सरकम स्टानसिज़ नहीं थे, अभी भी रहम दिल बाप के रहम का हाथ सबके ऊपर है इसलिए अपने ऊपर भी रहम दिल बनो। अच्छा।" (आकाशवाणी ता० २१-१२-१९७८)

वर्तमान राज्य सत्ताएँ बुद्धि को समान नहीं कर सकतीं और इसलिए परिणाम भी विचित्र उत्पन्न होते हैं। उदाहरणार्थ सबको कमाई करने का समान तख्त मिलता है परन्तु एक में ज्यादा बुद्धि होने के कारण उसे ज्यादा कमाई होती है जैसे दौड़ने की स्पर्धा में हरेक को दौड़ने के लिए समय समान मिले परन्तु एक को दौड़ने की गति ज्यादा होगी तो वह दूसरों से ज़रूर आगे चला जाएगा अर्थात समानता के आधार पर भेद ज्यादा निर्माण होता है इसलिए आर्थिक समानता-यह एक बहुत ही असंभव बात है।

क्षण-भर के लिए मान लिया जाए कि सबके पास समान-तख्त है और साथ-साथ समान धन भी है परंतु फिर भी प्रश्न यह है समान-तख्त और धन होते हुए भी क्या सबके दुःख या सुख समान होंगे और जो सुखी होंगे क्या उनका सुख सदा काल होगा ? सुख-दुःख में समानता सिर्फ़ धन से नहीं उत्पन्न होती। शरीर, कुटुम्ब, ज्ञान आदि-आदि अनेक बातों के आधार पर सुख और दुःख का निर्माण होता है। किसी की संतान होशियार होगी तो किसी की मन्द बुद्धि होगी तो इस सुख में सरकार समानता कैसे लाएगी। माँ-बाप के इकलौते बच्चे को उसकी सम्पूर्ण दौलत मिलेगी और दूसरे माँ-बाप को तीन बच्चे होंगे तो उनमें से हरेक १/३ दौलत मिलेगी। तो यह अनु-वंश के आधार पर उत्पन्न आर्थिक व्यवस्था के साथ साथ कौटुम्बिक व्यवस्था पर भी ध्यान देना ज़रूरी है। समाजवादी स्वप्न रखने वाली सरकार यह कैसे कर सकती है ? कौटुम्बिक व्यवस्था के द्वारा इस प्रकार की असमानता सिर्फ़ शिव पिता परमात्मा ही दूर कर सकते हैं क्योंकि सतयुगी दुनिया में स्वाभा-विक परिवार नियोजन है इसलिये अनुवंश के रूप में

आर्थिक असमानता सतयुग में नहीं होती।

इस तरह सतयुगी दुनिया में सभी प्रकार की व्यवस्थाएं अपनी सतोप्रधान स्थिति में होती हैं और सतोप्रधान होने के कारण सामुदायिक रूप में एक समान फल देती हैं इसलिये किसी भी दुःख दायक बात का निर्माण वहां नहीं होता। द्वापरयुग के बाद सभी व्यवस्थाएं एक समान आदर्श स्थिति में नहीं रहती जैसे पुरानी मोटर में नये टायर डालने का सुख सर्वश्रेष्ठ नहीं होता क्योंकि उसके और सभी अंग पुराने हैं। पुराने अंग दुःख देते हैं और पुराने अंगों का प्रभाव नये टायर पर भी पड़ता है इसलिये नई मोटर के नये टायर की आयु पुरानी मोटर के नये टायर से ज्यादा होती। इसी समान-तख्त रूपी नीति द्वारा समाज में फिर से सुख-शान्ति की समानता स्थापन नहीं हो सकती।

चरित्र और चुनाव

मताधिकार में समानता से राज्य तन्त्र के कारोबार में परिवर्तन होता है। राजा के स्थान पर अन्य किसी को भी प्रधानमंत्री अथवा मंत्री बनने का अवसर मिलता है—यह हकीकत है परन्तु प्रजातंत्र-राज्य पद्धति के विशेषज्ञ कहते हैं कि "प्रजातंत्र पद्यति में देश के योग्यतम व्यक्तियों द्वारा शासन कदाचित ही संभव है" (Democracy rarely permits a country to be governed by its ablest men). इस का कारण क्या है ? यह भी सोचने की बात है। चुनाव पद्धति के अंदर अनेक प्रकार के सिद्धांत-हीनता के, गुटबन्दी आदि के प्रयोग करने पड़ते हैं। शत-प्रतिशत न्यायपूर्ण रीति से आज तक कहीं भी चुनाव नहीं हुए हैं कारण ? दो पार्टीयों के द्वारा द्वैत के कारण मेरे-तेरे के रूप में वर्ग-भेद ज़रूर उत्पन्न होता है और सत्तावान पक्ष चुनाव के समय ज़रूर किसी-न-किसी रूप में सत्ता के सामर्थ्य का कूटोपयोग करता है। कई जगह चुनावों के नाटक भी होते हैं जैसे कि रशिया में एक ही पार्टी का एक ही उम्मीदवार खड़ा होता है और हरएक मतदाता को अनिवार्यतः उसे (Compulsory) मत देना पड़ता है और परिणाम स्वरूप वह उम्मीदवार ९९.९९ प्रतिशत मतों से जीतकर आता है चुनाव पद्धति का इस तरह का तमोप्रधान स्वरूप कहीं भी देखने में नहीं आता। अन्य देशों में प्रतिभा संपन्न, गणमान्य, विचारवान लोगों को नियुक्त सदस्यों के मत से चुनकर (By cooption) संसद सदस्य बनाया जाता है। इस तरह चुनाव पद्धति की कमी को दूर करने का प्रयत्न किया गया है।

चुनाव में मतदाताओं को झूठे प्रलोभन देकर उनके मतों को खरीदा भी जा सकता है तथा अनपढ़ मतदाता बिना सोचे-समझे जब मतदान करते हैं तो अल्पसंख्या-जाति (Minority Community) भी अपने क्षणिक स्वार्थ के कारण सर्व प्रकार के बाकी अच्छे दृष्टिकोण (Plus points) को न देख क्षुल्लक बातों के आधार पर मतदान देते हैं। मतदाता और चुने गए अधिकारी अर्थात संसद-सदस्यों का चरित्र-निर्माण न होने के कारण तथा अपनी पार्टी की बातों में पूरा विश्वास न होने के कारण आयाराम-गयाराम का जो निर्माण होता है उससे तो सतयुगी दुनिया की राज्यव्यवस्था कई गुनी अच्छी थी। अभी हाल ही में हमारे विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित देहली कान्फ्रेंस में लोकसभा के अध्यक्ष ने अपने प्रवचन में बताया था कि पंजाब के चुनाव में हरएक उम्मीदवार का-करीब १५ लाख रुपया खर्च होगा और कर्नाटक, मद्रास आदि स्थानों पर करीब ५ लाख का खर्च होगा। इसी के आधार पर यदि ५०० सीट के लिए, हर एक सीट के लिये यदि तीन उम्मीदवार भी खड़े हों और हर एक ५ लाख रुपया खर्च करता है तो ७५ करोड़ रुपयों का खर्च सिर्फ़ उम्मीदवारों का हुआ इसके अतिरिक्त सरकार का भी खर्च यदि २५ करोड़ हुआ तो १०० करोड़ रुपयों के खर्च से किये गये चुनाव से यही निष्कर्ष निकलता है कि ऐसे चुनाव भारत जैसा ग़रीब देश और वहाँ की ग़रीब जनता नहीं कर सकती। पाँच लाख खर्च के बाद पांच वर्ष के लिए संसद-सदस्य बनने की बात पर जब सोचते हैं तब शिवबाबा के आदर्श राज्य की महिमा सामने आती है जहाँ पर बिना खर्च दानव से मानव और मानव से देव बन कर विश्व के राज्य-अधिकारी बनते हैं।

अद्भुत और सही चुनाव

जनता के सामने तो जो दो-चार उम्मीदवार खड़े होते हैं उनमें से ही किसी को मत देने का प्रश्न रहता है चाहे हम उनके व्यक्तित्व और चरित्र के बारे में

कुछ न कह सकते हों। उनके संस्कार और सभ्यता के बारे में भी कुछ नहीं कह सकते। परमात्मा स्वयं भी एक बहुत बड़े मतदाता (Voter) हैं। वे सर्वज्ञ और त्रिकालदर्शी होने के कारण आदि-मध्य-अंत का ख्याल रख करके अपना मत देते हैं। वे इलेक्शन (Election) के बजाय सिलेक्शन (Selection) करते हैं। आज भी वह दृश्य सामने आता है जब उनके साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा अव्यक्त हुए, और फिर बाद में जब उनकी प्रवेशता उनके नये माध्यम मन में पहिली बार हुई तब उन्होंने सर्व ब्राह्मण परिवार के आगे अपना मत (Election कहो या Selection जोभी कहो) उसी पद्धति के द्वारा दादीजी और दीदीजी के सिर पर पुष्प रखकर जाहिर की। तो यह भी एक अद्भुत और अलौकिक चुनाव पारलौकिक परमपिता परमात्मा द्वारा हुआ और उसी चुनाव रूपी परिणाम से आज भी सारा दैवी परिवार शत-प्रतिशत (१००%) सहमत है। इसलिए परमपिता परमात्मा के द्वारा गुण, कर्म वृत्ति आदि सभी बातों की तुलना के परिणाम स्वरूप जो प्रभु पसन्द और लोक पसन्द बनते हैं वे ही वर्तमान और भविष्य राज्य कारोबार के सितारे, एक आदर्श राज्य-प्रणाली को चला सकते हैं।

वर्तमान चुनाव पद्धति के अन्तर्गत उम्मीदवारों के व्यक्तिगत चरित्र इत्यादि पर जब तक ध्यान नहीं दिया जाता तब तक ऐसी चुनाव पद्धति द्वारा आदर्श राज्य कारोबार चलाने वालों का चुनाव (Election) होना असम्भव है। शिव पिता परमात्मा इसलिये सभी उम्मीदवार बच्चों को कहते हैं कि जिसका स्व पर अधिकार होगा वही राज्य-अधिकारी बनेगा। भविष्य के ८, १०८, १६१०८ आत्माओं का चुनाव (Election) इसी गुण, कर्म, पवित्रता आदि चारित्रिक बातों पर होता है। तो इसी संगमयुग रूपी सबसे बड़े-से-बड़े चुनाव द्वारा घोषित परिणाम के आधार पर चुने गये राज्यअधिकारी अर्थात विश्व अधिकारी द्वारा प्रस्थापित राज्य व्यवस्था ही आदर्श व्यवस्था है।

रामराज्य अर्थात् परमात्मा का राज्य कई रामराज्य का ऐसा भी अर्थ ले सकते हैं। लेकिन दूसरा भी अर्थ है कि राम परमात्मा द्वारा चुने गये स्व अधिकारी सो राज्य अधिकारी, परमात्मा द्वारा प्रस्थापित राज्यव्यवस्था को निमित्त बन करके चलाने वाले अधिकारी और उसी अधिकारी द्वारा राज्य व्यवस्था हो। इसी दृष्टि कोण से सतयुगी दुनिया को और उसके राज्य कारोबार के बारे में जब सोचते हैं तो उसके सामने आज की प्रजातन्त्र-राज्य (Democracy) रूपी राज्यव्यवस्था बहुत फीकी, अपूर्ण और आंशिक लगती है। ●

आओ स्वर्ग बनायें

ब्रह्माकुमारी उषा, जोधपुर (राज०)

आओ स्वर्ग बनायें
उजड़ा बाग लगायें अपना, बिछुड़ा नीड़ बसायें
आओ स्वर्ग बनायें
डाल-डाल में हो हरियाली, महल-महल में हो खुशहाली
आज चमन के हम खुद माली, कली-कली खिल जायें
आओ स्वर्ग बनायें
कसो कमर और बाँह चढ़ा लो, सर्विस को ऊपर उठालो
ज्ञानामृत का दान करो तो, राह नई खुल जाये
आओ स्वर्ग बनायें
हमें ही फिर से भारत को, ये प्यारा स्वर्ग बनाना है
भागीरथ बन भू तल पर, घर-घर ज्ञान की गंगा बहायें
आओ स्वर्ग बनायें
विश्व गगन के आबू पर फिर, उदय हुआ शिव भगवान्
विमल चाँदनी बन वसुधा पर, सुधा किरण बरसायें
आओ स्वर्ग बनायें

यह चित्र हरदोई में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवसर का है। चित्र में ब्र० कु० सती जी एक ग्रुप को चित्रों की व्याख्या दे रही हैं।

यह चित्र गाँधीनगर के पाटनगर में आयोजित शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। वहाँ के पत्रकार सम्मेलन में प्रमुख समाचार पत्रों के प्रतिनिधी पधारे थे। यह चित्र उसी अवसर का है।

यह चित्र सिरोही में मनाये गये शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। ब्र० कु० शीलु प्रवचन कर रही हैं। मंच पर ब्र० कु० रत्न मोहिनी, भ्राता जुगराज जी वर्मा (जज) तथा मातादीन जी गुप्ता (सेशन जज) बैठे हैं।

यह चित्र कमलानगर (शक्तिनगर) सेवाकेन्द्र द्वारा सोहनगंज में मनाये गये शिव जयन्ती समारोह का है। ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी शिव ध्वजारोहण कर रही हैं।

यह चित्र इलाहाबाद में आयोजित शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। वहाँ की नगरपालिका के प्रशासक भ्राता पुरुषोत्तमदास चतुर्वेदी शिव ध्वजारोहण कर रहे हैं।

यह चित्र हाँसी सेवा केन्द्र द्वारा तोशाम में मनाये गये शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। ब्र० कु० गुलजार मोहिनी प्रवचन कर रही हैं तथा मंच पर कांग्रेस के प्रेजीडन्ट पण्डित माँगेराम आदि बैठे हैं।

यह चित्र अमरोली में शिवध्वजारोहण के अवसर का है। वहाँ के बहन-भाई परमात्मा शिव की याद में खड़े हैं।

यह चित्र गुलबर्गा सेवा केन्द्र द्वारा रुद्रवाड़ी ग्राम में आयोजित शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। वहाँ के गाँव प्रमुख के साथ बहन-भाई खड़े हैं।

यह चित्र जेतपुर में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। ब्र० कु० वनिता प्रवचन कर रही हैं तथा मंच ब्र० कु० रमीला, दमयन्ती, बकुला, भ्राता जोशी जी तथा प्रभुलाल भाई बैठे हैं।

यह चित्र रायगढ़ में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के भूतपूर्व विधायक भ्राता निरंजन लाल शर्मा ने किया। चित्र में वहाँ के बहन-भाइयों के साथ खड़े हुए दिखाई दे दे रहे हैं।

यह चित्र फरीदाबाद में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर का है। वहां के मुख्य प्रशासक भ्राता जे० पी० नारंग मोमबत्ती जलाकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

यह चित्र गाँधीनगर (पाटनगर) में आयोजित शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। इस अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन सूचना विभाग के निर्देशक भ्राता शरद मेहता करते हुए दिखाई दे रहे हैं

यह चित्र रोपड़ में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह का है। वहाँ के श्यन मिल्स के मालिक की धर्म पत्नी तथा अन्य प्रमुख महिलाएँ वहाँ के बहन भाईयों के साथ बैठे हैं।

यह चित्र शाहादरा में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। वहाँ के डाक्टरों के एक ग्रुप को ब्र० कु० सीता बहन समझा रही हैं तथा ब्र० कु० कमला खड़ी हैं।

यह चित्र सिरसी में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह का है। वहाँ के चौकीमठ के स्वामी गुरुसिद्ध तथा मारी देवस्थान के अध्यक्ष समारोह का उद्घाटन कर रहे हैं।

यह चित्र पुरी में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। वहाँ के लोकसभा के सदस्य भ्राता सी. पेनीगृही प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

यह चित्र चित्तौडगढ़ में 'दिव्य जीवन निर्माण सम्मेलन' के अवसर का है। वहाँ के पुलिस अधीक्षक प्रवचन कर रहे हैं।

यह चित्र सिकन्दराबाद सेवा केन्द्र द्वारा मिरयाल गूडा में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह का है। एल० आई० सी के ब्रॉंच मैनेजर भ्राता सुब्रह्मण्यम प्रवचन कर रहे हैं।

यह चित्र जगन्नाथपुरी सेवा केन्द्र द्वारा कोझर जेल में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम का है। ब्र० कु० निरुपमा प्रवचन कर रही हैं। मंच पर जेल अधीक्षक, जेलर तथा अन्य बहन भाई बैठे हैं।

यह चित्र कन्याकुमारी में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम का है। मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० प्रकाशमणि जी प्रवचन कर रही हैं।

यह चित्र पोरबन्दर में आयोजित आध्यात्मिक संग्रहालय के उद्घाटन के अवसर का है। वहां के धीरेन्द्र भाई मेहता दीप जलाकर उद्घाटन कर रहे हैं। साथ में वहाँ के बहन-भाई खड़े हैं।

यह चित्र तन्दूर (गुलबर्गा) में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। विजया बैंक के मैनेजर प्रवचन कर रहे हैं तथा मंच पर प्रसिद्ध वकील नरसिंहम् व वहां के बहन-भाई बैठे हैं।

कासगंज मेले का उद्घाटन ब्र० कु० आत्म इन्द्रा जी दीप जलाकर कर रही हैं साथ में भू० पू० विधान सभा के मेम्बर भ्राता काली चरण जी खड़े हैं।

यह चित्र विजयनगर (राजस्थान) में मनाए गए दिव्य जीवन आध्यात्मिक सन्मेलन का है। वहां के महा विद्यालय के प्राचार्य तथा दैनिक नव ज्योति के सम्पादक भ्राता दुर्गा प्रसाद बैठे हैं।

चित्र दुर्ग में कालेज डिबेट प्रतियोगिता का उद्घाटन जेल अधिकारी भ्राता स्वाथेनथरा राव जी कर रहे हैं।

यह चित्र ब्रह्मपुर (उड़ीसा) में शिव जयन्ती के अवसर पर निकाली गई शोभा यात्रा के अवसर का है।

यह चित्र लखनऊ में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवसर का है। भ्राता भवानी शंकर वहाँ के एच० ए० एल० कम्पनी के अधिसासी अभियन्ता आदि को चित्र की व्याख्या दे रहे हैं।

यह चित्र शक्ति नगर में आयोजित मासिक मिटिंग के अवसर का है। नए मकान के उद्घाटन के अवसर पर ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी ने नारियल तोड़ा तथा सभी भाई-बहन बड़ी हर्षित मुद्रा में खड़े हैं।

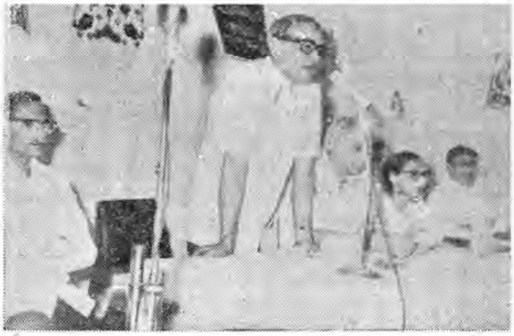

यह चित्र भावनगर में आयोजित शिव जयन्ती समारोह में वहाँ के असिस्टैन्ट सेल्स टैक्स कमिश्नर भ्राता आर० एम० पटेल अपने विचार प्रकट कर रहे हैं।

यह चित्र बीजापुर में आयोजित शिव जयन्ती समारोह में वहाँ के डिप्टी कमिश्नर भ्राता के० रंगप्पा अपने विचार प्रकट कर रहे हैं।

यह चित्र सतना में आयोजित 'शिव दर्शन मेला' के उद्घाटन के अवसर का है। वहां के जज भ्राता आर० एस० राठौर मेले का उद्घाटन करने के पश्चात् ब्र० कु० निर्मला, अवधेश तथा अन्य बहन-भाईयों के साथ खड़े हैं।

यह चित्र शाहबाद (गुलबर्गा) में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है ए० बी० बी कम्पनी के मैनेजर की धर्मपत्नी प्रवचन कर रही हैं। मंच पर नागरीक समीति की अध्यक्षा बहन दौलत भाई इरानी बैठे हैं।

फतेहपुर डि० जेल में विश्व ड्रामा के अद्भुत रहस्य को समझाते हुए भ्राता जेलर जी ब्र० कु० सरिता उन्हें चित्र की व्याख्या दे रही हैं।

ऊपर का चित्र तिरुपति में खोले गए आध्यात्मिक संग्रहालय के उदघाटन समारोह के अवसर का है। ब्र० कु० सुन्दरी प्रवचन कर रही हैं तथा मंच पर तिरुपति देवस्थान के प्रशासक भ्राता पी० वी० आर० के० प्रसाद, आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री भ्राता भास्कर राव तथा मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० प्रकाशमणी जी बैठे हैं।

यह चित्र नासिक में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। वहाँ की नगर पालिका के चीफ आफिसर भ्राता तलरेजा टेप काट कर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

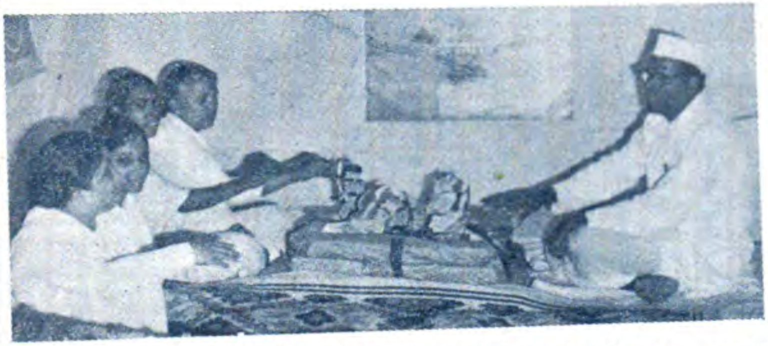

यह चित्र औरंगाबाद में लगाई गई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है जिसका उद्घाटन नगर परिषद के अध्यक्ष भ्राता अशोक खाँ ने किया।

यह चित्र मुरादाबाद में मनाई गई शिव जयन्ती समारोह का है। वहाँ के मजिस्ट्रेट कार्यक्रम का उद्घाटन मोमबत्ती जलाकर कर रहे हैं।

यह चित्र सम्बलपुर में मनाई गई शिव जयन्ती समारोह का है। वहां की युनिवर्सिटी के वाईस चान्सलर प्रवचन कर रहे हैं। तथा मंच पर वहाँ के बहन-भाई बैठे हैं।

प्रभु मिलन की प्यास

ब्रह्माकुमार सूरज कुमार, मधुबन, आबू

पात्र–

१. विनय—एक धनाढ्य मनुष्य जिसकी आयु ३० वर्ष है; शिक्षा M. A. है।
२. सीता—विनय की धर्मपत्नि, एक सभ्य शिक्षित नारी
३. गौतम ऋषि व उनका शिष्य
४. गीता—ब्रह्माकुमारी आश्रम की शिक्षिका
५. एक ढिंढोरची
६. सीता की सास व सखी मीरा
७. श्रद्धा नन्द—विनय का सन्यास के बाद का नाम

"प्रथम दृश्य"

मन्दिर का दृश्य। विनय मन्दिर में भजन मंडली के साथ प्रभु भक्ति में मग्न है।

दर्शन दो भगवान······दर्शन दो भगवान······
मोरा जीया बुलाये भगवान, आन मिलो सिया राम,
दर्शन दो भगवान······
जीवन बीता राह देखते,
सूना लागे जग बिनु तोरे,
आस मिटाओ मेरे प्राण,
दर्शन दो भगवान······
जिया तड़फ़त है, तुम बिनु मोरा,
मन नहीं लागत, जग में मोरा
मत तड़फ़ाओ मेरे प्राण······
आन मिलो भगवान······
दर्शन दो भगवान······

विनय प्रतिदिन मन्दिर में आकर भक्ति करता है, पर उसके मन को सान्त्वना नहीं मिलती।

विनय—(स्वयं से)—भगवन···क्या आप मुझे नहीं मिलोगे··· —सुना है आप जल्दी ही अपने भक्तों से प्रसन्न हो जाते हो, क्या मैं इतना पापी हूं···

मन में आवाज गूंजती है···प्रभु मिलन इतना सरल नहीं है···ऋषियों ने वर्षों तक तप किया, तब प्रभु दर्शन हुए।

(स्वयं से)—क्या मुझे भी घर छोड़ना पड़ेगा··· परन्तु···घर और सीता का त्याग···क्या यहमुझसे हो सकेगा···क्या सीता का दुखी मन मुझे शान्ति प्राप्त करने देगा······

(पर्दा गिरता है)

"दूसरा दृश्य"

घर का एक कमरा। विनय और सीता बैठे हैं।

विनय—सीता तुम्हारे आने से मेरे विचारों में विघ्न सा आ गया।

सीता—क्यों देव सदा ही आपकी सहयोगिनी बन कर रहूंगी। आप अपने भाव स्पष्ट करें।

विनय—सीता, में इस जीवन, में भगवान को मिलना चाहता हूँ···सत्य को प्राप्त करना चाहता हूँ।

सीता—देव, एक प्रतिव्रता नारी का कर्त्तव्य है, कि वह अपने पति के मार्ग में विघ्न न बने। उसकी ऊँची मंजिल में बाधक न बने। सीता ने राम को साथ दिया था, मैं भी आपकी सहयोगिनी बन कर साथ दूँगी······

परन्तु आपको अपना काम यहीं रहकर करना होगा देव।

विनय का प्रस्थान······

सीता—(मन भारी हो जाता है)—देव के मन में बहुत विरक्ति है। कहीं मुझे छोड़कर न चले जाएं, और मुझे जीवन के दिन वियोग में बिताने पड़ें। मेरे जीवन के सभी सपने धूमिल न हो जाएँ······

इन्हीं विचारों में सीता लेट जाती है···अश्रुधारा बहने लगती है।

कुछ समय बाद विनय आता है।

विनय—सीता, क्यों तुम्हें क्या हुआ, शायद मेरी बातें सुनकर डर गई, मैं तो यों ही आपसे दिल की बात कही थी।

सीता—नहीं-नहीं, यों ही कोमल मन पिघल गया।

विनय—लो तुम्हारे लिए एक धार्मिक पुस्तक लाया हूँ। आज एक महात्मा आये थे उन्होंने वैराग्य का उपदेश दिया और मेरा मन······

सीता—देव, मेरी इस सुकुमार जीवन नैया को इस भव सागर में लहराता न छोड़ जाना···

विनय—नहीं सीता, तुम्हें दुखी छोड़, मैं सुखी कैसे रहूंगा···धैर्य धरो सीता···मन को मत भरो, यह मुझसे देखा नहीं जाता।

(विनय का मन भी भर जाता है···थोड़ा सा वहीं घूमता है।)

सीता, संसार माया के कुचक्र में फसा जा रहा है। अन्धकार घना हो रहा है, प्रकाश की कहीं भी किरण नजर नहीं आती। कोई असहाय है, कोई दुःखी अशान्त, मुझे सत्य की खोज करनी है देवी···

सीता—ठीक है, अगर आप सत्य की खोज करना ही चाहते हैं, तो अवश्य कीजिये, परन्तु मुझे भी अपना साथी बना लो। मैं आपकी सेवा में तत्पर रहूंगी, कभी भी आपके मार्ग में विघ्न नहीं बनूंगी ···नहीं तो मेरा ये सुकुमार जीवन काँटों की शैय्या बन जाएगा···

अब सीता खुशी महसूस करती है और गीत गाती है···

तुम्हारे संग मैं भी चलूँगी पिया,
जैसे पतंग पीछे डोर···हो पिया······
साथ रहूँगी···हाथ बटाऊँगी······
कभी न राहों में काँटे बिछाऊँगी
चले जाना न अकेला मोहे छोड़···
तुम्हारे संग···
कहाँ भटकोगे अकेले जहाँ में,
साथ रहेंगे सुख और दुःख में,
नहीं होगा कोई दुःख और
तुम्हारे संग···
सीता गई थी वन, राम संग में,
ये सीता भी रंगेगी प्रभु रंग में
मत जाना तोड़ दिल डोर
तुम्हारे संग······

कुछ देर बाद विनय चला जाता है

विनय—(स्वयं से)—मेरे बन्धन कड़े होते जाते हैं···मैं इन्हें कैसे काट सकूंगा···सीता को छोड़ना··· ओह···वो रो-रोकर मर जाएगी···हे प्रभु मेरी मदद करो···

(इसी उधेड़ बुन में बहुत दिन बीत गये···परन्तु विनय का वैराग्य उसे चैन से सोने नहीं देता था।)

"तीसरा दृश्य"

रात्री का समय है, विनय और सीता सोये हुए हैं। बारह बजे हैं विनय उठता है···सीता पर दृष्टि डालता है···

विनय—सीता देवी, तुम सचमुच सीता हो। तुम्हें छोड़ने को मन नहीं करता तुमने मेरा मार्ग प्रदर्शन किया है···(नयन भर आते हैं) परन्तु···प्रभु से मिलने के लिये···

आज तुमसे विदाई लेता हूँ···

(हाथ जोड़कर)—भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हें जीवन में मेरा अभाव महसूस न हो। भगवान तुम्हें सदबुद्धि दें। मैं प्रभु को पाकर पुनः लौटूँगा···सीता तुम हताश मत होना···

पत्र लिखकर रखता है···

विनय सीता पर अन्तिम दृष्टि डालता है, दो मोती प्रेम के गिराकर मन को भारी करता हुआ, तेजी से निकल जाता है और दूर-दूर सुनसान जंगल में चला जाता है।

प्रातः सीता की आखें खुलती हैं। सीता पत्र पढ़ती है और करूण रूदन करती है।

छोड़ गये मेरे देव, तड़फ़ता छोड़ गये,
तोड़ गये मेरे दिल की आशा तोड़ गये।
कैसे चलेगी ये जीवन नैया, बिनु नाविक के मोरी
कैसे कटेगी रात अन्धेरी, बिनु दीपक के मोरी
जीवन में बस क्यों दो आँसू, दुख के छोड़ गये,
छोड़ गये मेरे प्राण तड़फ़ता छोड़ गये···
क्या तुमको अहसास नहीं, मैं रो-रोकर मर जाऊँ
कोमल दिल को तोड़ प्रियतम, वियोग में खो जाऊँ

जीवन में बिछुड़न की घड़ियां, छोड़ गये···
छोड़ गये मेरे प्राण, तड़फ़ता छोड़ गये···

सीता का करूण रूदन सुनकर, उसकी सास व सखी दौड़ी आती हैं चिट्ठी देखकर उनके भी नयन भर आते हैं···परन्तु सीता को समझाती है हम विनय को ढूंढ़ लायेंगे···सीता···वो जल्दी ही तुम्हारे पास आ जायेंगे ···तुम रोओ मत···हे भगवान शान्ति दो शान्ति दो···

सीता—आँसू पोंछकर···नहीं माँ···आप उन्हें प्रभु की खोज करने दो, मैं उनके मार्ग में रोड़ा नहीं

बनूँगी। मैं उनका इन्तजार कर लूंगी…माँ…वो अवश्य ही लौटेंगे…

सभी सखियाँ सीता को समझाती हैं…

(पर्दा गिरता है)

"चौथा दृश्य"

ढिंढोरे की आवाज कानों में सुनाई पड़ती है…

"इस नगर में जिस प्राणी को जीवन में दुःख, अशान्ति हो या प्रभु से मिलने की इच्छा हो वो ब्रह्मा कुमारी आश्रम की शरण लें और राजयोग सीखकर अपने जीवन को सुखी बनायें"

(आवाज सुनकर)

सीता—मीरा ये ब्रह्माकुमारी आश्रम क्या है ?

मीरा—यहाँ शहर में कुछ महीनों से ब्रह्माकुमारियाँ आई हैं जो श्वेत वस्त्र धारण करती हैं और भगवान का ज्ञान देती है। सुना है जो भी यहाँ जाता है उसे भगवान के दर्शन हो जाते हैं।

सीता—आप मुझे वहाँ ले चलो।

मीरा—चलो आज ही चलें…

दोनों सखी ब्रह्माकुमारी आश्रम पर जाती हैं

सीता—नमस्कार बहन जी…

ब्र० कु० गीता—नमस्कार बहिन आइये, बैठिये कहिये कैसे आना हुआ ?

सीता—बहन मैं एक दुःखी नारी हूँ। मेरे पतिदेव को भगवान से मिलने की बड़ी इच्छा थी। वो मुझे तड़फ़ती छोड़ जंगल में चले गये। और मेरा जीवन…अशान्त हो गया। कैसा जटिल है ये प्रभु मिलन का मार्ग,…ये मीरा बहिन मुझे यहाँ ले आई। अब मुझे शान्ति चाहिये।

मीरा—बहनजी, ये सीता M. A. तक पढ़ी हुई है। इनका दाम्पत्य जीवन बड़ा सुखद था, परन्तु अब ये वियोग में जीवन दुःखों के साथ बिता रहीं हैं। आप इनकी मदद अवश्य करें।

ब्र० कु० गीता—सीता, तुम सच्ची सीता बन सकती हो। अगर तुम्हारे पति से पहले तुम्हें ही भगवान मिल जायें तो…

सीता—(चेहरा खिल उठता है)—तब तो मेरे जैसा भाग्यशाली और कौन होगा…अगर मेरा पति प्रभु से मिलने के लिए घर बार छोड़ सकता है… तो मैं भी प्रभु से मिलने के लिये सब कुछ त्यागने को तैयार हूँ…

ब्र० कु० गीता—कुछ भी त्यागना नहीं होगा। केवल ये जानना होगा कि भगवान कौन है, व कहाँ है…उससे हमारा क्या नाता है…? अगर आप मीरा की तरह उसे भी अपना प्रियतम बना लें, तो आप का वियोग योग में बदल जाएगा…

सीता—बहन जी, इसके लिये मुझे क्या करना होगा ?

ब्र० कु० गीता—हम यहाँ ७ दिन का कोर्स देते हैं, आप वो लेकर प्रतिदिन राजयोग का अभ्यास करो तो शीघ्र ही तुम्हें प्रभु मिलन का आनन्द प्राप्त होगा…

सीता—शुभ कार्य में देरी क्यों अभी से मेरा कोर्स पूरा करो।

इस प्रकार सीता ७ दिन का ज्ञान लेती है, और राजयोग का अभ्यास करती है। उसका जीवन अब निखर चुका है, चेहरे की मुरझाहट दूर होती जा रही है, सीता के घर वाले उसकी खुशी में खुश हैं… सीता प्रतिदिन आश्रम जाती है घर में भी योगाभ्यास करती है। एक दिन सीता अपने जीवन में अतिन्द्रिय सुखों की अनुभवों में गीत गा रही है।

खुशियों भरी जिन्दगानी हमारी
देवी देवताओं से भी है जो प्यारी
खुशियों भरी…
जीवन में जो थे दुःखी दिल वाले
पदमा-पदम बने वही भाग्यशाली
मिला है हमें खुशियों का भण्डारी
देवी देवताओं से भी है जो प्यारी
खुशियों……
स्वर्ग हमारे नयनों में घूमे
अतिन्द्रिय सुख में हम झूमे
ब्राह्मण बनने की चढ़ी है खुमारी
देवी-देवताओं से भी है, जो प्यारी
खुशियों भरी…

(पर्दा गिरता है)

"दृश्य पाँचवाँ"

गौतम ऋषि का आश्रम……

उधर विनय दूर स्थित गौतम ऋषि के आश्रम में जाता है, जो उस समय के प्रसिद्ध विद्वान हैं।

विनय—(शिष्य से)—गौतम ऋषि कहाँ है ?

शिष्य—सामने ही समाधी में बैठे हैं, 'कुछ ही देर में उठेंगे, तब तक बैठो।

विनय—अहो भाग्य हमारे···बहुत दूर से आ रहा हूँ···दर्शन पाकर धन्य हो गया···अवश्य ही मेरी अभिलाषा पूर्ण होगी।

गौतम ऋषि समाधी से उठते हैं

विनय—दण्डवत हुआ···प्रणाम ऋषिवर्य···

गौतम ऋषि—कल्याण हो वत्स, नये जिज्ञासु प्रतीत होते हो।

विनय—प्रभु मिलन की प्यास में निकला हूँ गुरुदेव···

गौतम—पिछला सब कुछ भुलाना होगा वत्स···

विनय—भूल गया ऋषिवर्य, आप की जो आज्ञा होगी।

गौतम—बचपन से क्या रूचि रही है बत्स ?

विनय—गुरुदेव, बचपन से ही संसार से ही विरक्ति रही है। सांसारिक वैभव मुझे खींच नहीं सके। भोगों में मेरी आसक्ति नहीं है। मन बार-बार उदास होता था, सत्य की खोज में। और आज सब छोड़कर गुरु के चरणों में उपस्थित हुआ हूँ।

गौतम—ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण करे···

बेटा तुम सत्यपात्र हो, जो प्राप्ति मुझे हुई है, तुम पर प्रकट करूँगा···वत्स तुम्हें मुक्ति का सन्मार्ग दिखाऊँगा···

विनय—ऋणी हूँगा ऋषिवर्य···मुझे क्या करना होगा गुरुदेव···

गौतम—तुम श्रृद्धावान बन कर रहना। मैं तुम्हें पूर्ण ज्ञान दूंगा, और फिर समाधी का मार्ग दिखाऊँगा। समाधिस्थ होकर तुम सत्य की सिद्धि को प्राप्त होंगे। इसलिए आज से तुम श्रद्धा नन्द के नाम से जाने जाओगे।

विनय—अति कृपा होगी गुरुदेव···

गौतम—वत्स, ये पंचभौतिक तत्व का बना शरीर विनाशी है, इससे परे चेतन तत्व आत्मा है। आत्मा निर्लेप है बेटा···ये सुख दुःख प्रकृति के गुण प्रतीत होते हैं।

श्रद्धानन्द—तो क्या गुरुदेव, मनुष्य जो चाहे करे, आत्मा निर्लेप ही रहेगी···

गौतम—हाँ बेटा आत्मा निर्विकारी है, निर्लेप है।

श्रद्धानन्द—तो ऋषिवर्य, फिर श्रेष्ठ कर्मों का क्या महत्व है ?

गौतम—श्रेष्ठ कर्मों के बिना, मनुष्य सुखी नहीं रह सकता, आत्मा शुद्ध नहीं हो सकती।

श्रद्धानन्द—महाराज, जब आत्मा है ही निर्विकारी फिर उसकी शुद्धि कैसी ?

गौतम—बेटा, ये गुह्य बातें तुम जानते जाओगे

श्रद्धानन्द—परमात्मा के बारे में कुछ कहिये गुरुदेव···

गौतम—बेटा परमात्मा अकाय, अरूप, निर्विकारी है. उसका ही ध्यान करने से ही मुक्ति होगी।

श्रद्धानन्द—समझ में नहीं आया ऋषिराज

गौतम—संशय दूर कर सकते हो वत्स···तुम बुद्धिमान हो।

श्रद्धानन्द—गुरुदेव अरूप का ध्यान कैसे किया जाए ? मन टिकता नहीं सिद्धि होती प्रतीत नहीं होती।

गौतम—बेटा, यह सब अभ्यास से होगा···

श्रद्धानन्द—मैं समाधी का अभ्यास करूँगा, मुझे आशीर्वाद दो।

गौतम—तुम दृढ संकल्प धारी हो, बुद्धिमान हो, तुम अवश्य ही सफल होंगे। समाधिस्थ होने से तुम्हारी खोज पूरी हो जायेगी। बेटा, प्राचीन काल में अनेक ऋषियों ने ऐसा ही अनुभव किया है।

श्रद्धानन्द—गुरुदेव भगवान ने ये दुःख की दुनिया क्यों रची···उसे क्या आनन्द आता है, यह दुख का का खेल रचकर ? वह स्वयं ही क्यों नहीं मनुष्य को सुख शान्ति का मार्ग दिखाता···

गौतम—यह सब जग मिथ्या है, प्रभु की लीला है। जो दुःख भासता है, वह वास्तव में कुछ भी नहीं, स्वप्न मात्र है। ऐसा जानकर सदा निर्लिप्त रहो वत्स···श्रद्धानन्द, दार्शनिक ज्ञान से सन्तुष्ट नहीं हुआ। प्रभु की लीला और अपार दुःख···यह कैसी लीला···मैं सत्य की खोज करूँगा···चलो समाधि का अभ्यास करके भी देखूं। शायद तब ही कुछ प्रकाश मिले···

इस प्रकार कुछ समय दार्शनिक ज्ञान पर चर्चा करने के बाद-श्रद्धानन्द समाधी में बैठता है।

श्रद्धानन्द समाधिस्थ रूप में

५ वर्ष तक घोर तपस्या की, हर प्रकार से मन को एकाग्रता का अभ्यास किया···उनका शरीर सूखकर लकड़ी हो गया। परन्तु···क्षुधा शान्त नहीं हुई···

श्रद्धानन्द—(स्वयं से) बहुत दिन हो गये, गौतम जैसे महान तपस्वी से भी मनोकामना पूर्ण नहीं हुई। अब यहाँ से चलना चाहिए···एक दिन श्रद्धानन्द का गौतम ऋषि से छुट्टि लेना और प्रस्थान···श्रद्धानन्द एक शहर के समोप आश्रम बनाकर एकान्त में रहने लगे···

"दृश्य छटा"

श्रद्धानन्द का आश्रम-साय का समय

आश्रम में श्रद्धानन्द जी एकान्त में बैठे दिखाई दे रहे हैं।

श्रद्धानन्द—(स्वयं से)—दस वर्ष हो गये घर छोड़े···सीता इन्तजार करती होगी···शायद उसकी ही बेदना ने मुझे प्रभ दर्शन नहीं करने दिये···गौतम जैसे श्रेष्ठ ऋषि के पास से भी सन्तुष्ट नहीं हुई। समाधी में शरीर सुखा डाला, परन्तु सत्य की प्रतोति नहीं हुई···वेद और वेदान्त का अध्ययन भी पूर्ण हो गया···परन्तु मेरे प्रश्नों का उत्तर वे भी न दे सके। अब क्या···क्या यों ही लौट चलूँ···सीता तड़फती होगी···ओह मैंने क्या किया···

उठ जाता है

क्या सत्य का मार्ग इतना जटिल है प्रभु···हे प्रभु मुझे मार्ग दिखाओ अब मेरा कोई सहारा नहीं··· आप ही मेरा हाथ पकड़ो···मैं आप की शरण हूँ प्रभु···

श्रद्धानन्द इन्हीं विचार में व्याकुल सा हुआ सो जाता है···

उसे रात्रि को सपने में देवी का दर्शन होता है।

सवेरे उठता है

मग्न है किन्हीं विचारों में, लगता है आज कुछ होने वाला है। कोई मुझे आकर्षित कर रहा है।

अचानक ही श्रद्धानन्द का ध्यान खिच जाता है

एक श्वेत वस्त्र धारिनी नारी धीमी गति से चली आ रही है···

श्रद्धानन्द—(मन ही मन)—हंस सी चाल···न जाने क्यों ये मुझे आकर्षित कर रहीं है···ओह··· शायद ये मेरी ही ओर आ रही है कहीं सीता तो नहीं···नहीं-नहीं, सीता यहाँ इतनो दूर कहाँ···

सीता—ओम शान्ति, महात्मन

श्रद्धानन्द—···ओम, ओम, ओम, आइये विराजिए देवी

सीता—महात्मन कितने समय से यहाँ डेरा लगा है ?

श्रद्धानन्द—देवी अभी कुछ ही समय से आया हूँ···

सीता—काफी साधना किये लगते हो···जीवन का अनुभव सुना सकेंगे मुझे ?

श्रद्धानन्द—आप कौन हो देवी···

सीता—मैं ब्रह्माकुमारी हूँ···आपने ब्रह्माकुमारी आश्रम का नाम सुना होगा मैं वहीं पर ज्ञान योग की शिक्षिका हूँ···

श्रद्धानन्द—नाम तो सुना है देवी, परन्तु कभी दर्शन नहीं किये। सोचता था ऋषि मुनी भी सत्य को खोज नहीं कर सके, तो ये नारियाँ क्या ज्ञान देंगी······

सीता—ये भ्रम है महात्मन

श्रद्धानन्द—भ्रम क्यों···मैंने कई वर्ष समाधी लगाई, परन्तु सत्य स्वप्न ही बनकर रह गया। फिर भला बिना त्याग, ये नारियाँ कैसे सत्य को पा सकेंगी···

सीता—महात्मन् यह अहंकार मनुष्य को सत्य से दूर ले जाता है। क्या मुझे आप अपना सत्य अनुभव बता सकेंगे···प्रभु अनुभूति का।

श्रद्धानन्द—मैं सत्य प्रेमी हूं देवी··· मैंने प्रभु मिलन के लिए घर छोड़ा, पत्नि छोड़ी, परन्तु सत्य अभी दूर है।

सीता—(शक्य होता है)—क्या आप अपना पूर्व का परिचय दे सकेंगे···महात्मन्

श्रद्धानन्द—क्षमा करना देवी···

सीता—क्या आप सत्य ज्ञान हेतु, मेरा एक निवेदन स्वीकार करेंगे ?

श्रद्धानन्द—अवश्य देवी···

सीता—एक बार ब्रह्माकुमारी बहनों से सत्य ज्ञान लेकर, राजयोग का अभ्यास करके देखो···

श्रद्धानन्द—आभारी हूँ देवी आपका···परन्तु···

सन्यास धारण किया है···आपके आश्रम पर जाऊँगा, लोग मुझे पाखण्डी कहेंगे और मुझे आसक्त हुआ कहकर सन्यास के नाम को कलंकित करेंगे। देवी मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ···आपका भव्य चेहरा मुझे सत्य की ओर प्रेरित कर रहा है।

सीता—सत्य के जिज्ञासु को भय नहीं होना चाहिए···जिसके लिए इतने कष्ट सहे, उसके लिए भय···

श्रद्धानन्द—बहुत ऋणी हूँ आपका देवी···अगर आप मुझे राजयोग के बारे में यहीं कुछ बता सको,··· तो आपका आभारी हूँगा···

सीता—अच्छा राजयोग की एक झलक आपको दिखाती हूँ··आप मेरे साथ-साथ ही अभ्यास करना। इसमें किसी भी आसन या प्रणायाम की आवश्यकता नहीं···
मैं इस देह में प्रविष्ट एक आत्मा हूँ···
स्वयं को देह से न्यारा आत्मा समझ कर बैठो।
मैं भ्रकुटि में स्थित शान्त स्वरूप आत्मा हूँ···मैं ज्योति स्वरूप हूँ आनन्द स्वरूप हूँ···मैं ज्ञान स्वरूप आत्मा हूँ···
आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर बैठ जाओ।
चारों ओर सन्नाटा छा जाता है···

गीत बजता है···

योगी बनो, पवित्र बनो,···
जीवन में सचरित्र बनो···योगी बनो···
मन मधुबन हो, निश्चल वाणी, हृदय में छलके प्यार,
बहे ज्ञान की पावन गंगा, स्वर्ग बने संसार
योगी बनो···

श्रद्धानन्द आँखें बन्द कर लेता है···
आवाज गूँजती है···सत्य की जय हो···
श्रद्धानन्द कुछ क्षण के बाद आँखें खोलता है। सीता उसे वही साक्षात् देवी नज़र आती है—जो उसने स्वप्न में देखी थी।

श्रद्धानन्द—मानो शान्ति की शीतल पवन बह रही हो···मेरा अन्तरमन शीतल हो रहा है···देवी।

सीतादेवी—इसी प्रकारपरमात्मा भी अति सूक्ष्म ज्योति स्वरूप है···
वह परमधाम के वासी हैं···जो सूर्य चाँद तारों के भी पार प्रकाशमय ब्रह्म महतत्त्व है···वह हम सभी आत्माओं के परमपिता हैं—उनका दिव्य नाम शिव है···वह परमपिता ज्ञान के सागर हैं···प्रेम के सागर हैं···आनन्द के सागर हैं···
चले जाओ···उपर उन्हीं के पास और उनके प्रेम की लहरों में समा जाओ···

पुनः गीत बजता है—

ये ज्योति सा बिन्दु, ये दिव्य सितारा
ये कितना है सुन्दर, ये कितना है प्यारा···

इतने में श्रद्धानन्द को एक झटका सा लगता है और वह स्वयं को दूर-दूर जाता हुआ···आकाश को पार करता हुआ···दूर-दूर तक श्वेत प्रकाश में···एक फरिश्ते के सम्मुख पाता है···

फरिश्ता—कहो वत्स आ गये···

श्रद्धानन्द—असीम शान्ति प्रवाह में···कहाँ आ गया हूँ मैं···

फरिश्ता—बहुत भटके वत्स,···सत्य ज्ञान मेरे में ही है···अन्य कहीं भी नहीं···मुझे मेरे द्वारा ही जाना जा सकता है···

श्रद्धानन्द—आप कौन हैं परम पुरुष···
मैं आपको पाकर धन्य हो रहा हूँ···मेरा रोम-रोम पुलकित हो रहा है···मुझे ज्ञान प्रकाश का आभास हो रहा है···

फरिश्ता—मैं निराकार, सर्व आत्माओं का परमपिता शिव···जो इस समय ब्रह्मा के सम्पूर्ण स्वरूप में स्थित हूँ···
इतने में ही सीता देवी फरिश्ता रूप में वहाँ उपस्थित होती हैं···वह सीता को पहचानता है। इतने में ही उसकी आँखें खुलती हैं।
सीता का रूप उसे अति दिव्य लगता है···जो अपने प्रकाश से उसे आलोकित कर रही है···
श्रद्धानन्द एक टिक होकर सीता को देखता रहता है···स्वयंको रोक नहीं पाता···अश्रुधारा बहने लगती है और स्वयं को सीता के चरणों में समर्पित कर देता है···

सीता—कहो महात्मन् क्या देखा आपने···

श्रद्धानन्द—पा लिया···मैंने सत्य को पा लिया ···परन्तु मुझसे पूर्व तुमने पा लिया सीता···मैं वही विनय हूँ सीता···जो अब से १० वर्ष पूर्व तुम्हें सोता

छोड़ जंगल का राही बना था···मैंने बहुत कष्ट देखे ···बहुत तप किया···परन्तु कुछ नहीं पाया···तुम महान हो सीता···तुमने मुझे भगवत् दर्शन करा दिये···

यह कहकर विनय अतीत की यादों में खो जाता है··· और सीता उसे रहम भरी दृष्टि से निहारती रहती है···

(पर्दा गिरता है)

बाबा के प्रति

ब्रह्माकुमारी राजकुमारी नागपाल, पाँडव भवन, देहली

तेरी नज़र ने क्या कमाल किया।
रूहानी प्यार हमें बेमिसाल दिया।।

पड़े थे जहाँ के कूचे में बेकारों की तरह,
खिल उठे हैं हम जबसे मिली तेरी पनाह,

तूने हमें—
ऐसा ऊँचा दिव्य ज्ञान दिया।
देही बना के देह भान लिया।।

तेरी नज़र ने क्या कमाल किया।
रूहानी प्यार हमें बेमिसाल दिया।।

विकारों ने था निकाला दिवाला हमारा,
माया ने तो दिखा दिया था दिन में सितारा,
तुमने दिव्य गुणों से—
खूब सजा के हमारा श्रृंगार किया,
सबके सामने हमें साकार किया;

तेरी नज़र ने क्या कमाल किया।
रूहानी प्यार हमें बेमिसाल दिया।।

तेरी नज़र ने क्या कमाल किया।
रूहानी प्यार हमें बेमिसाल दिया।।

तेरी मुरलियों ने जीवन पलट दिया हमारा,
गेट खुलवाये स्वर्ग के कलष दिया न्यारा;
मन न चित्त ऐसा राज्य-भाग दिया।
निराला चमकीला ऐसा ताज दिया।।

थी हमारी बिल्कुल ही क्रिमिनल आई;
न समझते थे कभी किसी को भाई-भाई।
तुमने ऐसा पवित्र—
फ़रिश्तेपन का वायब्रेशन दिया,
हमारे जीवन में करैक्शन किया;

तेरी नज़र ने क्या कमाल किया।
रूहानी प्यार हमें बेमिसाल दिया।।

सूचना

'राजयोग' के चित्रों का जो संग्रह व्याख्या-सहित ज्ञानामृत तथा 'वर्ल्ड-रिन्युवल' के जून, १९७९ अंक के रूप में छपा था अब स्थायी साहित्य के रूप में सहज राजयोग और ईश्वरीय आनन्दानुभूति (चित्र और व्याख्या) शीर्षक से छप रही है। ५ अप्रेल तक छप जायेगी। जिसको जितनी प्रतियाँ चाहिए हों मंगवा सकते हैं। —व्यवस्थापक

आशा और संसार

ब्रह्माकुमार राजू, गुमला, राँची

एक प्राचीन कहावत काफी प्रचलित है, "आसरे पर संसार टिका हुआ है" सचमुच यह कहावत शत-प्रतिशत सत्य है, क्योंकि आज हरेक व्यक्ति को एक-दूसरे से आशा लगी हुई है कि अमुक व्यक्ति से या अमुक पुरुषार्थ से हमें अमुक वस्तु की प्राप्ति होगी।

उदाहरण के तौर पर एक राजनेता को ही ले लिया जाय। उसे अपनी कुर्सी की आशा है। थोड़ी देर के लिए अगर उसे किसी प्रकार की शंका या ग़लत फ़हमी हो जाती है कि उसको इस बार बहुमत नहीं मिलेगा तो वह अपना प्रयास छोड़ नहीं देता अपितु अपने पुरुषार्थ को द्विगुणित कर डालता है ताकि उसे बहुमत मिले एवं उसकी कुर्सी बच जाय।

दूसरी ओर हम एक भक्त का उदाहरण लेते हैं। भक्त अपने प्रभु की खोज में लगा हुआ है। उसकी अंखियाँ प्रभु की मात्र एक झलक ही पाने को व्यग्र हैं, कई साल बीत गए परन्तु अभी तक उसकी आशाओं की पूर्ति नहीं हुई है, फिर भी वह भक्ति में दिन-दूनी-रात-चौगुनी मेहनत किए जा रहा है। कि चाहे अन्त समय ही सही, वह प्रभु को पाकर ही रहेगा।

अब कुछ उदाहरण हम नये युग के निर्माताओं का लेते हैं। ये हैं नये युग के निर्माता वैज्ञानिक एवं समाज सुधारक गण। वैज्ञानिकों की पूरी उम्मीद है कि एक-न-एक दिन उनका आधिपत्य मंगल-इत्यादि ग्रहों पर स्थापित हो ही जाएगा। और इसी आसरे से वे नित्य नये अनुसंधान की ओर प्रेरित हो रहे हैं। इसी प्रकार से विद्यार्थियों को प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने की, वैज्ञानिकों को विशेष अनुसंधान की, राज-नेताओं को बहुमत प्राप्ति की, धर्म नेताओं को धार्मिक राज्य की एवं समाज-सुधारकों को नये समाज के निर्माण की आस लगी हुई है। और वे अपनी-अपनी रीति से पुरुषार्थ भी कर रहे हैं परन्तु सदियों के पुरुषार्थ के बावजूद हमारा विश्व पतन के गर्त में ही चलता जा रहा है। **क्या मैं** इन आशाओं के मध्य कोई आस रखूं कि मुझे नये विश्व की प्राप्त होगी ?

हाँ, अवश्य होगी ! परन्तु एक कठिन साधना से, एक कठिन पुरुषार्थ से, एक त्याग से, एक बलिदान से। वह त्याग है—पाँच विकारों रूपी आत्मा के शत्रुओं का त्याग, वह पुरुषार्थ है जन-जन में ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश भरकर आशाओं की ज्योति जगाने का, वह बलिदान है इस संसार के कल्याण के लिए दधिचि ऋषि के समान अस्थि-अस्थि भस्म कर डालने का !

बन्धुवर, यह मात्र हमारी प्रेरणा नहीं अपितु परमपिता-परमात्मा, सर्व आत्माओं के सागर, असार संसार से पार, ब्रह्मलोक के निवासी, विश्व कल्याण-कारी (शिव) त्रिलोकीनाथ की शुभ प्रेरणा एवं सख्त आदेश हैं। उनका कर्त्तव्य इस सृष्टि पर आज ४३ वर्षों से चल रहा है। जिस पवित्र मार्ग के सहारे परमात्मा शिव ने विश्व को परिवर्तन करने का संकल्प सन् १९३७ में लिया था, वह मार्ग अब अनुकरणीय है। क्योंकि लाखों नर-नारी पवित्रता एवं ब्रह्मचर्य की शक्ति को एकत्रित कर विश्व कल्याण के कार्य में जुटे हुए हैं। और हमें आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि हमारी उत्कट आशाओं की पूर्ति अति शीघ्र ही होने वाली है और हमारे समस्त संसार में राम राज्य मुस्काने वाला है। ●

(पृष्ठ ३४ का शेष)

अनमोल खुशियों का ख़ज़ाना उसे मिला है वह सभी को मिले, कोई भी वंचित न रहे। उसके इन संकल्पों को एक अप्रत्यक्ष बल मिलता और वह उस नये जोश से प्रेरित होकर अपने पुरुषार्थ को तीव्र गति प्रदान कर रहा था। किन्तु वह इस बात से भी सावधान था कि वह जोश में अपने होश को भी संतुलित रख सके और आध्यात्मिक क्रांति का झंडा फहरा के सारे विश्व में छाई मुर्दनी को खुशहाली में परिणित करने के पावन कार्य में परमपिता परमात्मा शिव का पूर्ण सहयोगी बन सके। ●

यह चित्र कलकत्ता के मुख्य भागों से निकाली गई विशाल शोभा यात्रा का है। इस अवसर पर शिक्षा प्रदर्शनियाँ भी निकाली गई थीं जिसके द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का परिचय एवं संदेश दिया गया।

यह चित्र तेजपुर में मनाई गई शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। वहाँ के गर्वनमैन्ट हाई स्कूल के हैडमास्टर (अवकाश प्राप्त) अपने विचार लिख रहे हैं। साथ में उनकी धर्म पत्नी बैठी हैं।

यह चित्र गुमत्ता में लगाई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। ब्र० कु० कुलदीप प्रवचन कर रही हैं तथा मंच पर ट्रेनिंग कालेज के प्राचार्य डा० अवधेश शर्मा बैठे हैं।

यह चित्र जालन्धर में लगाई गई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। (सेवामुक्त) मेजर जनरल राजेन्द्रसिंह सपैरो प्रदर्शनी का उद्-घाटन करने के बाद वहाँ के बहन भाईयों के साथ खड़े हैं।

यह चित्र गोनी कोपल में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह का है। कॉफी प्लानेटशन के मालिक भ्राता सी० पी० कुशलप्पा प्रवचन कर रहे हैं।

यह चित्र कलकत्ता कौननगर के बालिका शिक्षा सदन में आयोजित बाल प्रदर्शनी के अवसर का है। ब्र० कु० सौभाग्य एवं शान्ति, स्कूल के प्रधानाचार्य के साथ खड़ी हैं।

यह चित्र शक्तिनगर में मनाये गये शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। महानगर परिषद के पार्षद भ्राता चरतीलाल गोयल शिव-ध्वजारोहण कर रहे हैं तथा साथ में वहाँ के बहन भाई खड़े हैं।

यह चित्र राजकोट के पचनाथ मंदिर में शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। न्यूयार्क के भ्राता एडन प्रवचन कर रहे हैं।

यह चित्र मोदीनगर में मनाये गये शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। वहाँ के चिकित्सा अधिकारी डा० एम० एच० अम्बानी प्रवचन कर रहे हैं।

यह चित्र पूना म मनाये गये शिव जयन्ती समारोह का है। डा० पुरोहित प्रवचन कर रहे हैं।

यह चित्र ग्वालियर में आयोजित आध्यात्मिक संग्रहालय का है। मध्य प्रदेश के महालेखाकार ए० एल० तथा उनकी धर्मपत्नी को ब्र० कु० शीला चित्रों की व्याख्या दे रही हैं।

मोम्बासा में शिव जयन्ती के अवसर पर मंच पर भ्राता बिशप रुवा ब्र० कु० वेदान्ती ब्र० कु० प्रतिभा भाई रमेश जी दिखाई दे रहे हैं।

यह चित्र लखनऊ (त्रिपाठी नगर) सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर का है। वहाँ के प्रसिद्ध व्यापारी भ्राता विशम्भर दयाल अग्रवाल टेप काट कर कर रहे हैं।

यह चित्र मैसूर के टाऊन हाल में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। "स्टार पत्रिका" के सम्पादक अपने विचार प्रकट कर रहे हैं।

—यह चित्र झरिया में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। वहाँ एक मन्दिर में आयोजित प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या ब्र० कु० सरोज कर रही हैं तथा साथ में ब्र0 कु0 कुसुम खड़ी हैं।

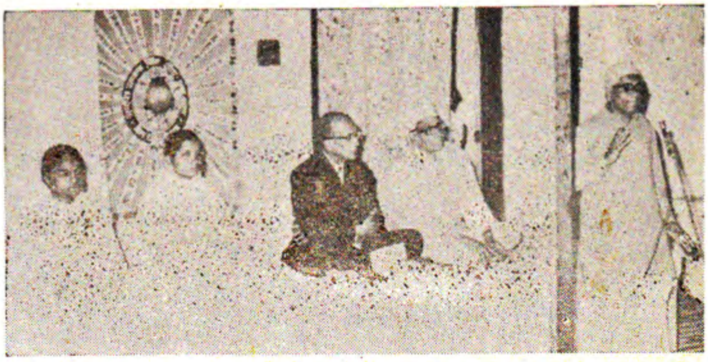

ऊपर का चित्र कोटा में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। भ्राता मधुकर शास्त्री प्रवचन कर रहे हैं।

बाँए का चित्र जूनागढ़ में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। वहाँ के संसद सदस्य एवं अन्य वक्तागण बैठे हैं.

नीचे के चित्र में देवनगर के पार्षद भ्राता मोतीलाल पाण्डव भवन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन टेप काट कर कर रहे हैं।

यह चित्र पटेल नगर सेवा केन्द्र द्वारा मनाए गए शिव जयन्ती समारोह का है।

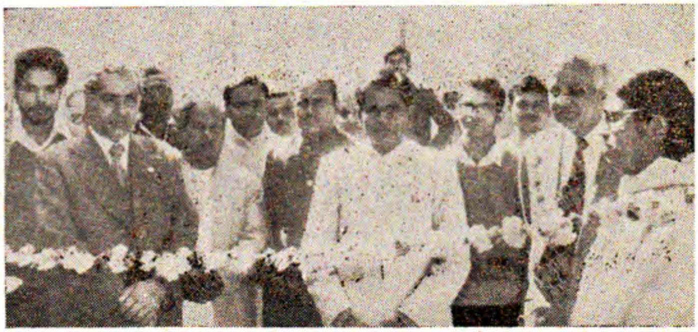

यह चित्र चौमुहाँ (मथुरा) में आयोजित शिव दर्शन मेला एवं 'सर्व धर्म सम्मेलन' के अवसर का है। वहाँ के संसद सदस्य चौ० दिगम्बरसिंह मेले का उद्घाटन कर रहे हैं। उनके साथ ब्र० कु० विमला, फूल चमेली तथा अन्य बहन भाई खड़े हैं।

यह चित्र नसीराबाद में आयोजित चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का है। केन्द्रिय विद्यालय के प्रधानाचार्य भ्राता के० पी० गोयल अपने विचार प्रकट कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० विनोद (वकील) ब्र० कु० सुकर्मा एवं शक्ति बैठी हैं।

यह चित्र बाड़ीपदा में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के अवसर का है। भ्राता सद्चिदानन्द मिश्रा (भूतपूर्व जज) प्रवचन कर रहे हैं।

यह चित्र त्रिनगर में शिवरात्रि के अवसर का है। भ्राता सज्जनकुमार (लोकसभा के सदस्य) ध्वजारोहण करने के बाद वहाँ के बहन भाईयों के साथ खड़े हैं।

यह चित्र बुरहानपुर में आयोजित आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन के अवसर का है। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणी जी एवं जिलाधीश भ्राता निर्मलकुमार एन० एन्ड्रूज दीपक जलाकर मेले का उद्घाटन कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० बृजेइन्द्रा आर ी तथा अन्य बहन भाई खड़े हैं।

यह चित्र लखनऊ (पेपर मिल कॉलोनी) सेवा केन्द्र द्वारा मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। भूतपूर्व शिक्षा एवं सहकार मन्त्री भ्राता विजय कुमार त्रिपाठी को ब्र० कु० सुमित्रा ईश्वरीय साहित्य भेंट कर रही हैं।

यह चित्र आदिपुर में आयोजित शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। बम्बई के भूतपूर्व मेयर भ्राता खन्नजी भाई ध्वजारोहण कर रहे हैं।

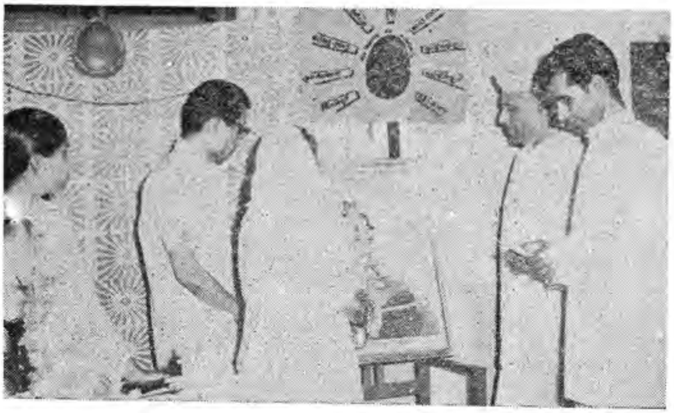

यह चित्र इलेकल में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। वहाँ के प्रसिद्ध डॉक्टर काखण्डकी तथा को चित्रों की व्याख्या दे रहे हैं।

यह चित्र उदयपुर में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। ब्र० कु० पुष्पा प्रवचन कर रही हैं। मंच पर एडवोकेट मेहता जी तथा आबकारी विभाग के डिप्टी कमिश्नर बैठे हैं।

—यह चित्र फतेहपुर में आयोजित शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। भ्राता सीतानाथ एडवोकेट शिवध्वजारोहण कर रहे हैं, साथ में ब्र० कु० दुलारी तथा अन्य बहन भाई खड़े हैं।

| यह चित्र पालम सेवा केन्द्र पर 'शिव ध्वजारोहण' के अवसर पर वहाँ के बहन-भाई परमात्मा शिव की याद में खड़े दिखाई दे रहे हैं।

यह चित्र बुटवल (नेपाल) में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्‌घाटन लुम्बिनी के अंचलाधीश भ्राता मनमोहन मिश्र कर रहे हैं।

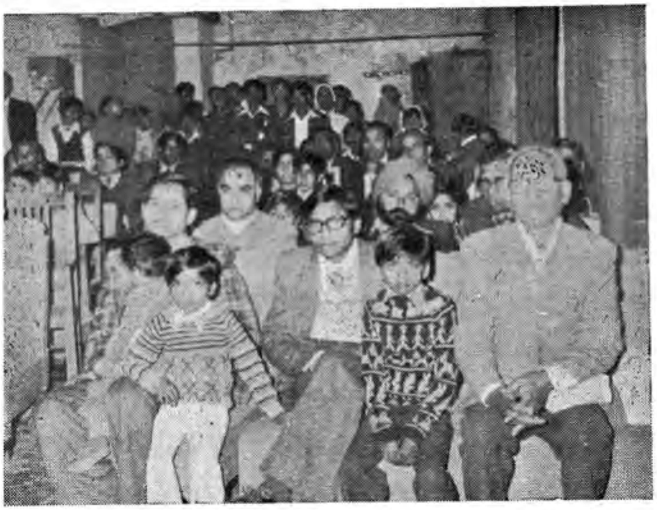

| यह चित्र आगरा जज क्लब में आयोजित राजयोग फिल्म के अवसर का है। वहाँ के जज, वकील व अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठे हैं।

| यह चित्र अजमेर सेवा केन्द्र पर शिव ध्वजारोहण के अवसर का है। वहां के बहन-भाई परमात्मा शिव की याद में खड़े हैं।

| यह चित्र राजौरी गार्डन सेवा केन्द्र द्वारा नारायण विहार में आयोजित शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है।

| यह चित्र होशियार पुर में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। ब्र० कु० राज वहाँ के डिप्टी कमिश्नर को प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या दे रही हैं

जीवन का आधार–'निश्चय'

ब्र० कु० प्रमोद (गोवा)

अपने व्यक्तिगत जीवन में यदि व्यक्ति किसी लक्ष्य की प्राप्ति का निश्चय कर आगे बढ़ता है तो सफलता उसके कदम (चरण) चूमती है। अनेकानेक शक्तियों में निश्चय शक्ति का विशेष महत्व है। जैसे जीवन में प्राणों का महत्व है और प्राणों के लिए धमनियों में रक्त संचार की आवश्यवता है वैसे ही मानव जीवन के सही दिशा में प्रगति के लिये अथवा व्यक्ति के निर्माण के लिये स्थाई सशक्त विचारों रूपी प्राणों का और फिर उनमें निश्चयरूपी रक्त का प्रवाह होना जरूरी है। वस्तुतः निश्चय ही विचारों के प्राण है। उपरोक्त उदाहरण से, निश्चय रूपी गुण के हमारे व्यक्तिगत जीवन में कितना विशेष महत्व है, यह हम समझ सकते हैं। इस एक गुण में अनेक गुण समाए हुए हैं जिन गुणों के आधार पर मनुष्य जीवन सुखी और समृद्धिवान बनता है।

'निश्चय' की आधारशिला—भावना और विवेक

केवल भावना का स्थान मनुष्य जीवन में ऐसा है जैसे अन्धकार में भागने के समान। जिसमें न तो पथ का ज्ञान होता है और न सही दिशा का ध्यान होता है। ऐसी स्थिति में अक्सर मनुष्य अन्धःकार में धक्के खाता रहता है। ऐसा पुरुषार्थ अक्सर व्यर्थ चला जाता है—परन्तु इसके साथ-साथ विवेक का भी उतना ही महत्व है जितना भावना का है। यदि विवेक को एक दिशा सूचक (मार्गदर्शक) के रूप में मानव अपने जीवन में स्थान दें तो वह सही राह से गुज़रता हुआ अपनी मंज़िल तक पहुंच सकता है। इसलिए विवेक और भावना का मनुष्य जीवन में विशेष महत्व है। विवेक और भावना के समन्वय पर अधारित निश्चय तो बहुत शक्ति सम्पन्न होता है। केवल इतना ही नहीं बल्कि विवेक और भावना की नींवपर ही निश्चय के शक्ति भवन का निर्माण सम्भव है।

निश्चय से लक्ष्य की प्राप्ति

निश्चय सफलता की जड़ भी है। जैसे वृक्ष की जड़ें जितनी गहरी शक्ति सम्पन्न व मजबूती से धरती में फैली होगी उतना वह वृक्ष अधिक फैल सकेगा, बढ़ सकेगा, फल फूल दे सकेगा तथा चिर आयु बिता सकेगा। कमजोर जड़वाला वृक्ष शीघ्रता जड़जड़ीभूति अवस्था को प्राप्त कर लेता है। मानव-जीवन संघर्ष के लिए प्रेरणा का स्रोत केवल निश्चय ही है। निश्चय ही मानव में उत्सर्ग, वैराग्य व त्याग की भावना को बलवान करता है। निश्चय के बिना मानव निष्प्राण पत्थर के समान है जिसमें जीवन नहीं है, स्थिरता है वह जड़ मात्र है। निश्चय रहित मानव मृत्यु-तुल्य है। निश्चय के बिना आत्मा की सर्व शक्तियाँ सुषुप्त अवस्था में रहती हैं। हमारे में आत्म-विश्वास व मनोबल भरने वाला तथा विचारों में जागृति करने वाला निश्चय ही है। मानव-जीवन में आसुरी वृत्तियों से छुटकारा पाने के लिए निश्चय रूपी खड्ग् एक सफल सिद्ध शस्त्र भी है तभी आत्मा पावन एवं सतोप्रधान बन हल्की होकर उड़ती है। निश्चय को ही सिद्धि का बीज कहा जाता है जिससे हम विश्व के महाराजा श्री नारायण व विश्व महारानी श्री लक्ष्मी के सर्वोच्च व्यक्तित्व (देवत्व पद) की प्राप्ति कर सकते हैं। निश्चय के आधार से ही तो सर्वशक्तिवान् परमात्मा से अनन्तशक्ति, स्नेह एंव प्रेरणाओं को प्राप्त किया जा सकता है। परमात्मा में निश्चय बुद्धि प्राणी से अधिक निश्चिन्त और सुखी जीवन किसका होगा?

संशय पुरुषार्थी को निष्प्राण कर देता है, जिससे आत्म विश्वास खो जाता है। परिणामस्वरूप कार्य-क्षमता भी घट जाती है। फिर अपनी कमियों और कमज़ोरियों से पुरुषार्थ में रूकावट आ जाती है। मन के समस्त विचारों को निश्चय की डोर से बाँध रखने से ही हमारे पुरुषार्थ द्रुतगति से लक्ष्य की ओर आगे

बढ़ता है। इसलिए कहा जाता है कि **निश्चय ही हमारे जीवन नैय्या को गतिशील करता है**"। ऐसी स्थिति में ही दिव्य गुणोंका विकास होता है। हमारी विवेक शक्ति में दिव्यता का संचार होता है। हमारे में दिव्य-बुद्धि का प्रादुर्भाव होता है। दिव्यदृष्टि की देन भी 'निश्चय' का ही बरदान है। ऐसे बरदान को प्राप्त करने से ही हम सुख-शान्ति और पवित्रता के गन्तव्य स्थान को पहुच सकते हैं। यदि हम कहें कि 'निश्चय' ही हमारे भावी जीवन का निर्माता है तो औचित्यता के बाहर की बात न होगी।

लो आ गया

ब्रह्माकुमार रमेश, दत्तियाना

लो आ गया जिसको बुलाते थे हज़ारों साल से।
जिसको अगम-निर्गुण समझ कर हम हुए थे ना समझ,
भूल उसको स्वयं को भी भव-जाल में गये थे उलझ,
लो आ गया सच्चा पथ दिखाने छुड़ा देने भव जाल से।
बुद्धि भटककर खोजती—जिसको पहाड़ों मन्दिरों में।
कभी काबा; कैलाश, गंगा, गिरजाघरों में, मस्जिदों में,
लो आ गया वह मन के द्वारे, ज्ञान-दीप जलाने संभाल से।
जिसको भुलाकर हो गये थे, माया के वशीभूत सब,
खो दिये सब वैभव अपने, सोचा न था पायेंगे कब,
लो आ गया वह राज देने, छिन चुका जो रावण की चाल से।
बहा कर ज्ञान की गंगा-मृतकों को वह जिलाता है,
बजा कर ज्ञान की मुरली, माया को दूर भगाता है,
लो आ गया सुख-शान्ति देने, भय मिटाने और छुड़ाने काल से।
पा कर उसे हैं धन्य हम-बनायेंगे धरती को भी धन्य,
सत्य पिता को पा गये जब, क्यों न हो शक्ति अनन्य,
लो ला दिया बैकुण्ठ उसने, जो खो गया था कल्प से।
लो आ गया जिसको बुलाते थे-हज़ारों साल से।

शिव की अद्भुत किरणें

ब्रह्माकुमार अनूपसिंह, अम्बाला छावनी

सूर्य-सी अज्ञान रूपी अन्धकार मिटाने वाली किरणें
चन्दा-सी सर्व पर स्निग्ध-स्नेह लुटाने वाली किरणें
चक्षु-सा जीवन में हर पल साथ निभाने वाली किरणें
एक्स-रे-सी देह-अभिमान के गुप्त भेद दर्शाने वाली किरणें

हीरों-सी आकर्षक रंग से हमें रिझाने वाली किरणें
लाईट-हाऊस-सी भटकी रूहों को राह दिखाने वाली किरणें

शीतल जल-सी विकाराग्नि को तुरन्त बुझाने वाली किरणें

फव्वारा-सी राजयोग का स्नान कराने वाली किरणे
टी० वी०-सी हमें तीन लोक का दृश्य दिखाने वाली किरणें

चुम्बक-सी सभी रूह-कणों को खींच ले जाने वाली किरणें

नदिया-सी चेतन पौधों को ज्ञान से सींचने वाली किरणें

बगिया-सी मोहक सौरभ से मस्त बनाने वाली किरणें
लिफ्ट-सी दुःखधाम से सुख *धाम ले जाने वाली किरणें*
जादुई हैं ये—मनुष्य को सुन्दर देव बनाने वाली किरणें।

आध्यात्मिक कहानी

असमंजस के बाद···सामंजस्य

ब्र० कु० सुरेन्द्र कुमार, नीमच

अपनी मंज़िल से अनजान वह पथिक लगातार बढ़ रहा था ज़िन्दगी के पथ पर। पथ था, पथिक था—पर मंज़िल ? मंज़िल पर अंकित था प्रश्न चिह्न ? किन्तु फिर भी वह बढ़ रहा था लगातार, ज़िन्दगी की अनजानी राहों पर। मंज़िल की एक अस्पष्ट और धुंधली-सी तस्वीर अपने मन-मंदिर में बिठाये वह बढ़ता जा रहा था। उसकी कल्पना कितनी मीठी थी, कितनी अपूर्व ! उसके सपने कितने सच्चे थे, कितने सुखद ! ! लेकिन क्या वह राह, जिसका कि वह राहगीर था, सही थी ? क्या उसी राह पर चलकर वह अपनी कल्पना को, अपने सपनों को, मूर्त और साकार रूप में परिणित कर सकता था ? यूं दूसरा प्रश्न चिह्न लगा और लगाया खुद उसने। किन्तु फिर भी ना जाने कौन-से धागों में बंधा खिंचा खिंचा-सा, गर्म लू के बवण्डरों की झुलस में झुलसता, बोझिल कदमों, शिथिल और भारी मन को घसीटता-सा वह चला जा रहा था। उसकी ज़िन्दगी का चेहरा धूप में गर्म लोहे की तरह तपा हुआ था, आँखें अंगारों-सी जल रही थी, ललाट पर रूखे बे-तरतीब बाल डोल रहे थे, होंठ सूख कर पपड़ी बन गये थे, कंठ चटक रहा था, मुंह का थूक तक जम गया था किन्तु फिर भी वह चला जा रहा था मृगतृष्णा के भुलावे में···हर मोड़ पर नया साथी मिलता, कुछ देर साथ निभाता, अपनापन जताता फिर छोड़ कर चल देता। किन्तु वह हर बार उन क्षणिक सायों को अपना साथी समझ बैठता, अपने आप को मोह के धागों से बाँध लेता पर वे···वे उसके मासूम अरमान को खामोशी और तन्हाई के कफ़न से ढाँक कर आगे बढ़ जाते अपनी मंज़िल के शृंगार में और उसकी मासूम अभिलाषाओं का शव खामोशी के कफ़न तले सूखे पत्तों-सा खड़खड़ाता रह जाता। यूं उसका जीवन-पथ उजड़ चुका था, उसकी आशाओं के बाग में पत-झड़ आ चुका था···ग्रीष्म की जलन ज्वाला ने उसे जला डाला था और चौमासे की चमक ने उस कच्ची हरियाली को क्षणिक चमका के उस पर सदा के लिए स्याह घटाएँ बिछा दी। यूं लगातार व्यथा की उन राहों पर बढ़ कर वह राहगीर स्वयं की राहों में एक के बाद एक लगातार कई प्रश्न चिह्न लगाये जा रहा था जिनका उत्तर ढूंढना ऐसे था मानो सहारा के रेगिस्तान में झील की तलाश···

आख़िर वह कब तक उन राहों पर चल पाता ? राहों पर जीवन की विषमताओं ने उसे जर्जर बना दिया था, उसका दम उखड़ चुका था किन्तु वह लम्बी राह निर्जन थी। सच्ची राह के अभाव में झूठी राह का अंधकार अपनी बाहों को फैलाता चारों ओर फैलता जा रहा था और उस राह का हर वृक्ष सुन-सान किसी मृतक की छाया-सा निस्तब्ध खड़ा था, हर दिशा में मृतात्माओं की कांपती आवाज़ें, भयानक चीखें उस वातावरण का समर्थन कर रही थी।

अब उसके बढ़ते कदम शक्ति रहित होकर स्वतः ही रुक गये जैसे उसकी तन्द्रा भंग हो गई हो। उसके अन्तर मन से एक साथ कई प्रश्न उठ खड़े हुए "ये मैंने क्या किया ? मैं अब तक कहाँ जा रहा था ? कहाँ जाना था, कहाँ आ गया ? कैसी होगी वो दुनिया जहाँ ठोकरें न होंगी, थपेड़े न होंगे, एक असीम सुख-शान्ति होगी। छल कपट धोखे और फरेब से कोसों दूर वो दुनिया कैसी होगी ? क्या उस पावन दुनिया का सुख मेरे नसीब में है ? क्या अब भी मैं इस काबिल हूँ जो उन पवित्र राहों पर अपने भटके हुए कदम रख सकूं ? ? ? किन्तु इस बार के प्रश्न चिह्न अपने आप में एक नई चेतना स्फूर्ति और साहस समेटे हुए थे जिनका उत्तर पूर्व के प्रश्नों की तरह रेगिस्तान में नहीं रेंग रहा था। ये प्रश्न चिह्न स्वयं का आस्तित्व मात्र प्रश्न चिह्न से हटाकर पूर्णविराम-सा बनाने को उद्यत थे।

सहसा उसे ज़ोर का चक्कर आया अपने आपको सम्हाल न पाया और जर्जरता की चरमसीमा के उस मोड़ पर वह गिर पड़ा। शायद शांत होकर जीवन-

रूपी जंजीर की बिखरती कड़ियों को पुनः एकत्रित करने का प्रयास कर रहा था। एकाएक उस चेतना-हीन पार्थिव शरीर में हलचल हुई और वह धीरे-धीरे अपनी विस्मृत शक्ति को स्मृति में लाता विश्वास के साथ पुनः खड़ा हो गया। वह सुन रहा था यह नेपथ्य ध्वनि जो उसके कानों में जोश घोल रही थी और उसका पथ-प्रदर्शन कर रही थी—

बदल दे उन राहों को, जिन पर माया का साया है।
हिम्मत कर तू, मदद को तेरी, खुद ख़ुदा आया है ।।

उसे लगा वह शक्तिशाली हो गया है, उसके दिल में आत्मप्रकाश दैदीप्यमान हो उठा। जो होंठ सूख कर पपड़ी हो चुके थे, वे अब एक नई ताज़गी के साथ मुस्कान बिखेर रहे थे। और एक निश्चय के साथ उसके कदम यंत्रवत चल पड़े निश्चय की राह पर, स्वप्निल मंज़िल की ओर…उसकी पदचाप भी उसका समर्थन करती कुछ यूं गुनगुना रही थी—

हिम्मत हिम्मतवर करता है, ये बुज़दिलों का काम नहीं।
तेरी पहचान ही हिम्मत है, कायरता तेरा नाम नहीं ।।

अब पथिक निश्चय के पथ पर बढ़ रहा था, उसको स्वमान का भान हो चुका था। जो अब तक अनजान राहों पर भटक रहा था और जिसका दिल असमंजस के जाल में अटक रहा था, वही पथिक अब अपने चेहरे पर विशिष्ट आशा के भाव लिए निश्चय की राह पर एक निश्चय के साथ बढ़ चला था। इस बार मंज़िल पर कोई प्रश्न चिह्न अंकित नहीं था। पथिक को पथ के साथ-साथ मंज़िल भी स्पष्ट दिखाई दे रही थी। उसकी कल्पना…उसके सपने…अब साकार रूप में परिणित होते दिखाई दे रहे थे और वह राह भी, जिसका वह राहगीर था, सुनसान और वीरानी की परतों से नहीं ढकी थी। खामोशी और तन्हाई का कफ़न ख़ुशी की लहरों में बह गया था। क्योंकि अब वह अकेला नहीं था, उसके साथ उसके हाथ को थामे स्वयं परमपिता परमात्मा थे, जिन्होंने पथिक के अस्तित्व को नया आयाम दिया था। मंज़िल से विमुख राहगीर को उसकी मंज़िल का बोध कराया था, जिससे एक के बाद एक सारे प्रश्न-चिन्ह स्वयं का हल सुझाते हुए लुप्त होते जा रहे थे। अब उसे बोधी वृक्ष के साये में यह बोध हो चुका था कि वह कौन है? उसे कहाँ जाना है, क्या पाना है? ख़ुद उसकी मंज़िल उसकी राहों पर रोशनी बिछा कर उसे पुकार रही थी…

ऐ ख़ुदा के बंदे देख मुझे, और आ इन रोशन राहों में।
तेरे ख़्वाबों की मंज़िल हूँ मैं, तू आजा मेरी बाहों में ।।

और वह प्रसन्नता में झूमता उन राहों पर बढ़ता जा रहा था। उसका दिल मस्ती में लहराता उसकी ख़ुशियों में साथ निभाता गा रहा था…

हमने…साज़े जन्नत के तार छेड़कर, ये गीत गुनगुना लिया।
कि…अब रही न आरज़ू कोई, जो पाना था, सो पा लिया ।।

हाँ, वास्तव में उसने वो सब कुछ पा लिया था जो उसे पाना था। उसकी परिस्थितियों में अब पूर्ण रूपेण सामंजस्य स्थापित हो गया था, क्योंकि वह असमंजस के सभी तारों को काट आया था। अब तो वह ख़ुद था, ख़ुदा था और ख़ुदाई थी। और आज—वह पुनः उन सभी स्नेहीजनों के परिवार में स्थान पाकर उनके साथ कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ रहा था जिनसे कि वह ५००० वर्षों से बिछुड़ चुका था। उन सबकी आवाज़ में वह भी अपनी आवाज को ऊँचाई के भी पार ले जाने के प्रयास में सबसे कह रहा था—

ख़ुदा से जुदा रूहों को, अब कब्रे जिस्म से आज़ाद करो।
निकालो जनाज़ा जिस्म का, और रूहे चमन आबाद करो ।।

उसकी आवाज़ को समर्थन मिलता…उसका मंज़िल की ओर एक कदम उसकी मंज़िल के सौ कदम नज़दीक ले आता और वह दुगने जोश के साथ अगला कदम बढ़ाता। उसमें एक जोश था, एक उमंग थी। वह सभी को ज़िन्दगी की नयी राहों से परिचित करवाना अपना पवित्र कर्त्तव्य समझने लगा। उसकी हार्दिक इच्छा अब यही थी कि जो

(शेष पृष्ठ २४ पर)

यह चित्र सोनीपत में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। मंच पर ब्र० कु० सुधा, चक्रधारी एवं जनक जी दिखाई दे रहे हैं।

| यह चित्र लखनऊ (खुर्शीदबाग) सेवा केन्द्र द्वारा शिव जयन्ती के उपलक्ष में निकाली गई शोभा यात्रा के अवसर का चित्र है।

| यह चित्र भैरहवा (नेपाल) में आयोजित शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है।

| यह चित्र महू में आयोजित शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। वहाँ की जैविक उत्पादन संस्थान के विभागाध्यक्ष डा० कवलेकर अपने विचार प्रकट कर रहे हैं।

| यह चित्र जामखमालियाँ में आयोजित शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है।

| यह चित्र (नयागंज) कानपुर सेवा केन्द्र द्वारा हुसनगंज में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है।

यह चित्र चंद्रपुर में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है । वहाँ के सरदार पटेल कालेज के प्रधानाचार्य प्रवचन कर रहे हैं ।

यह चित्र अमरेली में मनाए गए शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है । ब्र० कु० गीता प्रवचन कर रही हैं ।

यह चित्र सोलापुर में शिव ध्वजारोहण के अवसर का है। वहाँ के डी० एस० पी० ध्वजारोहण कर रहे हैं।

यह चित्र गुमला में मनाए गए आध्यात्मिक कार्यक्रम का है। ब्र० कु० कुलदीप राजयोग की व्याख्या दे रही हैं तथा मंच पर कालेज के प्रधानाचार्य व अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठे हैं।

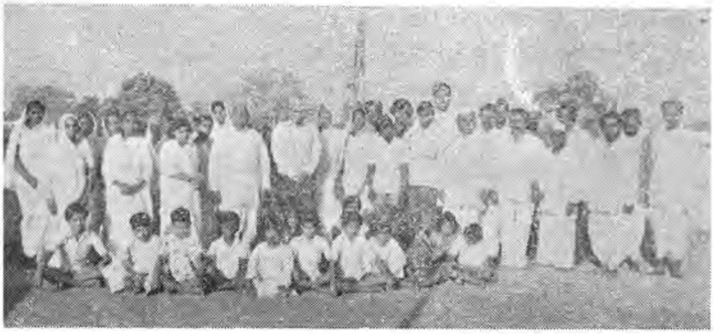

यह चित्र भण्डारा में मनाए शिव जयन्ति समारोह के अवसर का है । वहाँ के न्यायाधीश भ्राता ग्वान्दे जी ध्वजारोहण करने के बाद वहाँ के बहन-भाईयों के साथ खड़े हैं

यह चित्र धारवाड़ में आयोजित अन्तर कालेज स्पर्धा के अवसर का है । वहां की विजेता कन्याओं को ब्र० कु० वासवराज शील्ड प्रदान कर रहे हैं।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ले० ब्रह्माकुमार सुन्दरलाल, कमलानगर, दिल्ली

विभिन्न सेवा केन्द्रों से ईश्वरीय सेवा करने के बहुत ही उत्साहवर्धक एवं शिक्षाप्रद समाचार मिले हैं जिनका सारांश यहाँ उद्धृत है—

शिव-जयन्ती के अवसर पर विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु आध्यात्मिक प्रवचनों, गीतों, आध्यात्मिक प्रदर्शनी, राजयोग फिल्म, राजयोग शिविर, शोभा-यात्रा एवं झाकियों का कार्यक्रम विभिन्न सेवा केन्द्रों द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित जन-समूह को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया तथा साथ-साथ यह खुशखबरी सुनाई गई कि परमात्मा शिव नई सतयुगी, सुख-शान्ति सम्पन्न सृष्टि की स्थापना कराने हेतु प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण तन में अवतरित हो चुके हैं तथा सहजज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा द्वारा मनुष्य मात्र को पावन बनाकर दिव्य गुण सम्पन्न बनाने का शुभ कार्य पिछले ४३ वर्षों से करा रहे हैं। इस शुभ सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने में स्थानीय समाचार पत्रों रेडियो तथा दूरदर्शन आदि संचार साधनों का भी बड़ा सहयोग मिला।

इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन फतेहपुर, जूनागढ़, कोटा, अमरेली, बड़ौदा, हरदोई, ग्वालियर, करौली, वाराणसी, वारंगल, मण्डी, डबवाली, मोगा, फरीदाबाद, इल्कल, चन्द्रपुर (बल्लारशा), लखनऊ, कानपुर, बलसार, हिसार, पालम, इलाहाबाद, हांसी, नवसारी, राजकोट, दतियाना, मेरठ, मोदीनगर, पटना, नडियाड, बलसार, गुलबर्गा, इटावा, जालन्धर, होशियारपुर, सहारनपुर, सोनीपत, पानीपत, करनाल, अम्बाला, आनन्द, बेडवा, नेपाल, बरहामपुर, भण्डारा, अजमेर, नसीराबाद, जयपुर, भरतपुर, राँची, गुमला, हुबली, सोलापुर, कटक, वरीपदा, भुवनेश्वर, पुरी, कोल्हापुर, गोवा, नवाशहर, अमृतसर, पूना, अहमदाबाद, जबलपुर, देहरादून, पटियाला, ऊना, शिमला, बटाला, शिमला, नीमच, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, जोधपुर, मुजफ्फरनगर, मुजफ्फरपुर, गोहाटी, तेजपुर, मुरादाबाद, विजयनगर, दसूआ, वर्धा, भटिण्डा, बरेली, धनवाद, सिन्दरी, रायगढ़, धारवाड़, गाजियाबाद, त्रिनगर, शाहदरा आदि स्थानों पर बड़ी धूमधाम से किया गया।

तिरूपति में आध्यात्मिक संग्रहालय द्वारा ईश्वरीय सन्देश—दक्षिण भारत के प्रमुख तीर्थ स्थान तिरूपति में आने वाले यात्रियों को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय देने हेतु एक प्रमुख स्थान पर आध्यात्मिक संग्रहालय खोला गया है जिसका उद्-घाटन मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी ने किया। इस अवसर पर शहर के अनेक प्रमुख लोग उपस्थित थे जिनमें आन्ध्र प्रदेश के पोर्ट मंत्री भ्राता एवं भास्कर राव भी सम्मिलित हैं। इस संग्रहालय को देखने प्रतिदिन हजारों लोग आ रहे हैं। आन्ध्र-प्रदेश के मुख्य मंत्री भ्राता एम० चेन्ना रेड्डी तथा अनेक विधानसभा के सदस्यों ने भी इस संग्रहालय को देखा और इसे श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने का सहज साधन बताया। एक विशाल शोभा यात्रा एवं झाँकियों का कार्यक्रम भी बहुत ही सफल रहा। वहाँ के योगा रिसर्च इन्सीटय्यूट में विद्यार्थियों के लाभार्थ ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए तथा राजयोग फिल्म दिखाई गई। वहाँ के स्कूलों एवं कालेजों के विद्यार्थियों के लाभार्थ निबन्ध प्रतियोगिता, भाषण प्रतिस्पर्धा तथा आर्टप्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें अनेक विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार भी दिए गए।

तेजपुर तथा गोहाटी में होली महोत्सव—गोहाटी सेवा केन्द्र की ओर से निकटवर्ती ग्राम बरपेटा में होली-महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया तथा प्रवचनों के अतिरिक्त आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसके द्वारा अनेकानेक लोगों को इस पर्व का वास्तविक महत्त्व समझाया गया इसी प्रकार तेजपुर में भी होली का उत्सव बड़ा सफल रहा।

बरेली में स्नेह मिलन—बरेली सेवा-केन्द्र द्वारा होली के अवसर पर स्नेह-मिलन के कार्यक्रम में अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलाया गया तथा इस पर्व का महत्त्व समझाया गया। इसके अतिरिक्त वहाँ के "विशाल होली मिलाप मेला" में प्रदर्शनी द्वारा अनेकानेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

विजयनगर में दिव्य जीवन निर्माण आध्यात्मिक सम्मेलन—विजयनगर में स्थित सेवा केन्द्र द्वारा आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें प्राज्ञ महाविद्यालय के प्रधानाचार्य मुख्य अतिथी के रूप में पधारे थे। "दैनिक नवज्योति' के सम्पादक चौधरी दुर्गाप्रसाद ने इस अवसर पर नारी के उत्थान पर बहुत ही प्रभावशाली विचार रखे।

जेतपुर में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—जेतपुर सेवा केन्द्र की ओर से होली के अवसर पर नारी-स्नेह मिलन का आयोजन किया गया जिसमें अनेक सामाजिक संस्थाओं की प्रमुख बहनों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त शिवदर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया जिससे हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

सिरसी में चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी—सिरसी में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के एक प्रमुख स्थान पर चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसे लगभग ३०००० लोगों ने देखा और परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया। वहाँ के प्रसिद्ध मारीकेवा देव स्थान की ओर से १०८ शिवलिंग का जुलूस बैल-गाड़ियों एवं ट्रकों पर निकाला गया था जिसमें सेवा-केन्द्र की ओर से सतयुग और संगम युग की दो झाकियाँ भी प्रदर्शित की गई थी।

मुजफ्फरनगर में वर्गीकरण की सेवा तथा प्रदर्शनी—मुजफ्फरनगर सेवा केन्द्र की ओर से प्रमुख वकीलों, जज एवं डाक्टरों की विशेष सेवा की गई तथा उन्हें परमात्मा शिव का परिचय दिया तथा राजयोग का अभ्यास कराया गया। चरित्र निर्माण प्रदर्शनी तथा प्रवचनों द्वारा भी अनेकानेक आत्माओं को श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा दी गई।

कासगंज में चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक मेला—कासगंज सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ की प्रसिद्ध "गंगा देवी धर्मशाला" में 'चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक मेला' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन भूतपूर्व एम० एल० ए भ्राता कालीचरण अग्रवाल तथा ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी ने किया। इस मेले को लगभग ६०००० लोगों ने देखा तथा इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविर से अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

भावनगर में आध्यात्मिक कार्यक्रम—विदेशों से पधारे हुए अनेक भाई-बहनों के आगमन पर भाव-नगर सेवा केन्द्र द्वारा वहाँ के विभिन्न कालेजों एवं स्कूलों में आध्यात्मिक प्रवचनों एवं प्रोजेक्टर शो का आयोजन किया गया। निकटवर्ती ग्रामों में भी ईश्वरीय सन्देश पहुंचाने का कार्य बड़ा ही सफल रहा। इस अवसर पर शिक्षाप्रद नाटक, गीत, नृत्य व सम्वाद का सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुआ जिससे उपस्थित जनता बहुत प्रभावित हुई।

बुरहानपुर में नव-विश्व आध्यात्मिक मेला—जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु बुरहानपुर के मुख्य स्थान पर नव-विश्व आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ के जिलाधीश ने दीपक जलाकर किया। इस मेले का विस्तृत समाचार वहाँ के दैनिक समाचार पत्रों "नई दुनिया" "दैनिक भास्कर", "नवभारत" आदि में प्रकाशित हुआ। मेले को शहर के तथा निकटवर्ती ग्रामों के सभी वर्ग के लगभग ३०,००० लोगों ने देखा तथा श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली। अनेक स्कूलों एवं कालेज के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने भी इस मेले का लाभ उठाया। इस अवसर पर शहर के मुख्य भागों से विशाल शोभा यात्रा एवं झाकियाँ भी निकाली गईं।

चौमुहाँ (मथुरा) में शिवदर्शन मेला एवं सर्व धर्म सम्मेलन—चौमुहाँ उप सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के प्रमुख स्थान पर शिव दर्शन मेला तथा 'सर्व धर्म सम्मेलन' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन संसद सदस्य चौ० दिगम्बर सिंह ने किया। इस मेले को अनेकानेक आत्माओं ने देखा और परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त वहाँ के सर्वोदय इन्टर कालेज के प्रांगण में आर्यसमाज, सनातन धर्म, जयगुरुदेव, सिखों, मुस्लिम तथा थियोसोफिकल सोसाइटी के

प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन हुआ जिसमें परमात्मा केबारे में सभी ने अपने-अपनेविचार प्रकट किये। इस सम्मेलन की शहर के प्रमुख व्यक्तियों ने बहुत प्रशंसा की क्योंकि सारा कार्यक्रम बहुत सौहार्दपूर्ण वातावरण में सुचारू रूप से सम्पन्न हुआ।

कलकत्ता में होली पर शोभा यात्रा एवं झाकियाँ—कलकत्ता सेवा केन्द्र की ओर से होली के अवसर पर विशाल शोभा यात्रा एवं झाकियाँ निकाली गई। इसके अतिरिक्त वहाँ विभिन्न मंदिरों में प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ तथा काशीपुर में स्थित सर्वमंगला देवी मंदिर के प्रांगण में 'शिवदर्शन प्रदर्शनी' लगाई गई। इस प्रदर्शनी को हजारों लोगों ने देखा तथा इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविर से अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

हैदराबाद में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—हैदराबाद सेवाकेन्द्र की ओर से वहाँ के गाँधी ज्ञान मन्दिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा राजयोग फिल्म दिखाई गई। वहाँ के कम्यूनिटी हाल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन भी बड़ा ही सफल रहा। अनेकानेक आत्माओं ने परमात्मा शिव का यथार्थ परिचय पाया तथा सच्ची सुख शान्ति का अनुभव किया।

हुबली में शोभा यात्रा एवं आध्यात्मिक प्रवचन—हुबली में १०८ शिवलिंगों का एक विशाल जलूस १०८ बैलगाड़ियों, एवं ट्रकों पर निकाला गया तथा शोभा यात्रा, के आगे हाथी सजा हुआ चल रहा था। बीच में सर्व 'आत्माओं के पिता' तथा 'सतयुग' की झाँकी थी अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का यथार्थ परिचय दिया गया तथा 'पवित्र और योगी' बनने का ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

इन्दौर में युग परिवर्तन आध्यात्मिक सम्मेलन—इन्दौर सेवा केन्द्रकी ओर से प्रमुख स्थान (रविन्द्र नाट्यगृह) में परमात्मा का 'यथार्थ परिचय देने तथा युग परिवर्तन के बारे में जानकारी देन हेतु "युग परिवर्तन सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में अरविंद सोसाईटी, अपुव्रत आन्दोलन, बहाई धर्म, सत्यसाई आश्रम, महेश योगी, रजनीश आश्रम तथा क्रिश्चियन धर्म के प्रतिनिधियों ने भाग लिया इस सम्मेलन का समाचार स्थानीय समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुआ जिनमें से 'नई दुनिया' 'स्वदेश', 'नवभारत', 'इन्दौर समाचार', 'जागरण', तथा 'विश्व भ्रमण', का नाम उल्लेखनीय हैं। आकाशवाणी ने भी इसका समाचार प्रसारण किया। इस अवसर पर आयोजित साँस्कृतिक कार्यक्रम से भी उपस्थित जनता बहुत प्रभावित हुई।

बुटवल (पश्चिमी नेपाल) में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—भरैहवा (नेपाल) में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से बुटवल नगर में विश्व-नव-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। "उद्योग विकास प्रदर्शनी" में ६ स्टाल फ्री लेकर यह प्रदर्शनी लगाई गई थी जिसे हजारों लोगों ने देखा और श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन लुम्बनी जोन के अंचला धीश भ्राता मनमोहन मिश्र जी ने किया। इसके अतिरिक्त भैरहवाँ के सेवा केन्द्र पर शिव जयन्ती बड़ी धूमधाम से मनाया गया तथा वहाँ के बाल विद्या मन्दिर के हाल में सार्वजनिक प्रवचनों एवं गीतों का सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ।

लखनऊ (खुरशीद बाग) में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—लखनऊ (खुरशीद बाग में स्थित) सेवा केन्द्र की ओर से स्थानीय समाचार पत्रों की विशेष रूप से सेवा की गई जिसके परिणाम स्वरूप समाचार पत्रों के सम्पादक व प्रैस रिपोर्टर आध्यात्मिक म्यूजियम में पधारे तथा बहुत प्रभावित होकर गये। उन्होंने अपने समाचार पत्रों में इस विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही सर्विस का समाचार प्रकाशित किया इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक प्रवचनों का कार्यक्रम वहाँ की सैन्ट्रल जेल एवं स्कूलों में हुआ। सेवा केन्द्र पर भी शिव जयन्ती महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

बीकानेर के निकटवर्ती ग्रामों में ईश्वरीय सन्देश—बीकानेर सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के निकटवर्ती ग्रामों में आध्यात्मिक प्रवचनों एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिनमें से ग्राम अम्वासर व जलालसर का नाम उल्लेखनीय है। स्थानीय सेवा केन्द्र पर शिव जयन्ती समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

मोरेशस में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—मोरेशस में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम वहाँ के सुप्रसिद्ध 'कावेडी' नामक त्योहार के अवसर पर वहाँ

की सुरम्य पहाड़ी पर स्थित 'परमात्मा शिव' के मन्दिर के प्रांगण में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी को सभी वर्ग के हजारों लोगों ने देखा। इनमें से एक अंग्रेज तथा तीन हिन्दुस्तानी भाई प्रतिदिन सेवा केन्द्र पर पधार रहे हैं। वहाँ की तमिल यूनियन का प्रधान तथा व्यापारी वर्ग की अच्छी ही सेवा हुई।

तत्पश्चात् शिव-जयन्ती के अवसर पर वहाँ के प्रसिद्ध स्थान "गंगा तालाब" (परि-तलाब) के तट पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसको हजारों लोगों ने देखा और परमात्मा शिव का यथार्थ परिचय पाया। इसी प्रकार सेवा केन्द्र के बाहर ही राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय नगर पालिका ने बहुत सहयोग दिया। शिव ध्वजारोहण तत्कालीन प्रधानमंत्री भ्राता रिंगाडु ने किया तथा सूचना मंत्री भ्राता सुरेश मुखामुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। इसका विस्तृत समाचार वहाँ के समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ तथा आकाशवाणी और दूरदर्शन द्वारा भी प्रसारण किया गया।

ऊना में होली महोत्सव—ऊना में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से होली महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर वहाँ के निकट "मैडी" नामक पहाड़ी पर हर वर्ष 'होली मेला' लगता है जिसमें लाखों लोग इकट्ठे होते हैं। इस अवसर का लाभ उठाकर स्थानीय सेवा केन्द्र द्वारा वहाँ आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसे हजारों लोगों ने देखा और लाभ उठाया।

वर्धा में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—वर्धा में स्थित सेवाकेन्द्र की ओर से शहर के प्रमुख भागों से विशाल शोभा यात्रा एवं झाकियाँ निकाली गई तथा वहाँ के प्रसिद्ध 'रमन भाई डाह्याभाई पटेल हाल' में सार्वजनिक प्रवचनों एवं गीतों का कार्यक्रम हुआ जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त महिलाओं का स्नेह मिलन तथा निकटवर्ती ग्रामों में आयोजित प्रदर्शनी का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा।

दिल्ली एवं नई दिल्ली सेवा केन्द्रों द्वारा होली महोत्सव—होली के पावन पर्व का आध्यात्मिक महत्व तथा उसको आध्यात्मिक रीति मनाकर पवित्र बनने का ईश्वरीय सन्देश देने हेतु दिल्ली तथा नई दिल्ली में स्थित सेवा केन्द्रों पर सार्वजनिक प्रवचनों एवं गीतों का कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर उपस्थित जनता को 'होलिकादहन', 'मंगलमिलन' आदि की व्याख्या देते हुए बताया गया कि 'योगाग्नि में विकारों' का दहन करने से ही हम सच्ची खुशी परमात्मा से मंगल मिलन मना सकते हैं। शक्तिनगर करौल बाग, राजौरी गार्डन, पटेल नगर, साऊथ एक्सटैन्शन, मालवीय नगर, आदि स्थानों पर आयोजित कार्यक्रम बहुत ही सफल रहे।

बरनाला में ज्ञान की होली चंडीगढ़ की ओर से बरनाला (पंजाब) में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसको देखकर अनेक आत्माओं ने ज्ञान की होली खेली और अपनी आत्मा को योग की अग्नि में तपाया। जिसके फलस्वरूप वहाँ अनेक आत्माएं रोज ज्ञान स्नान कर रही हैं।

जलगाँव में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक मेला—जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु जलगाँव के मुख्य स्थान पर एक विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया जिसके उद्घाटन के लिए माउंट आबू से पधारी राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी ब्रिजेन्द्रा जी बम्बई से पधारी थीं। जलगाँव खादेश मिल के चेयरमैन भ्राता सुरेश कुमार जैन जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। मेले के अवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गयी थी जो शहर के मुख्य-मुख्य स्थानों से गुजरी, जिसके द्वारा हजारों आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश मिला।

इसके अतिरिक्त पत्रकारों का एक स्नेह मिलन रखा गया। पत्रकारों ने भी काफी सहयोग दिया। मेले के अवसर पर राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया जिसमें करीब ६०० आत्माओं ने विशेष लाभ लिया। स्कूल व कालेज के विद्यार्थियों ने भी इस मेले से काफ़ी लाभ उठाया।

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक, एवं प्रकाशक, १५१ ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिंटर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-५१ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D) 178